राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
मई - 2026
मूल्य ₹ 50/-

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532
www.swarnimumbai.com

दुनिया के टॉप 'मीथेन हॉटस्पॉट' मुंबई और सिकंदराबाद

'बंगाल में 'खेला' खत्म:
दीदी की विदाई, कमल की चढ़ाई!

मिस इंडिया 2026:
भुवनेश्वर का KIIT बना फैशन और ग्लैमर का नया केंद्र

Wholesale Furniture Market

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 11 • अंक: 02 • मुंबई • मई 2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing, Near Shahad Station, Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

महाराष्ट्र पर दोहरी मार - युद्ध की छाया और सूखे की आहट	05
'जब गर्मी बन जाए संकटः मुंबई में बिजली की बढ़ती मांग और ...	06
४७,००० जुर्म और २४५ साल की सजा!	10
दुनिया के टॉप 'मीथेन हॉटस्पॉट'	14
पकवान	18
चंद्रयान-४ः चांद से मिट्टी लाने की तैयारी,...	20
'डिजिटल थकान'	22
राशिफल	24
अमेज़न के घने जंगलों में २५०० साल पुराना लुप्त शहर!	26
सिनेमा	29
गोवा की साध्वी सैल बनीं फेमिना मिस इंडिया २०२६	32
कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भारत की ६वीं सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी	34
पुरी धाम में अक्षय तृतीया की परम्परा	36
किसका सपना?	38
तट की पुकार	44
लालची गोलू और शहद का घड़ा	49
नाममात्र की नारीशक्ति और महिला आरक्षण का पेच...	50
KEM Hospital Mumbai का नाम बदलने पर छिड़ा सियासी घमासान?	52
सिंधु जल संधि का 'डेडलॉक'	54
ककड़ी की खेती	56

सुविचार :

'लोग चाहते हैं कि मैं बेहतर करूं, लेकिन वो कभी नहीं चाहते कि मैं उनसे बेहतर करूं ।'

तपती धरती और बड़ी चुनौती!

आज जब हम इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, तो मानवता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती किसी सरहद का विवाद या आर्थिक मंदी नहीं, बल्कि इस धरती का लगातार बढ़ता तापमान है। हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ मई की चिलचिलाती धूप केवल एक मौसमी घटना नहीं रह गई है, बल्कि यह प्रकृति द्वारा दी जा रही उस अंतिम चेतावनी का हिस्सा है जिसे वैज्ञानिक 'ग्लोबल बॉयलिंग' का नाम दे रहे हैं। धरती के इस तरह तपने की प्रक्रिया रातों-रात शुरू नहीं हुई, बल्कि यह पिछले दो सौ वर्षों के अनियंत्रित औद्योगिक विकास, जीवाश्म ईंधनों के बेतहाशा दोहन और प्रकृति के साथ किए गए खिलवाड़ का संचयी परिणाम है। औद्योगिक क्रांति के बाद से मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए कोयले, तेल और गैस को इतनी भारी मात्रा में जलाया है कि हमारे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की एक ऐसी अभेद्य परत बन गई है जिसने सूरज की गर्मी को धरती के घेरे में ही कैद कर दिया है। इसे हम ग्रीनहाउस प्रभाव के रूप में जानते हैं, लेकिन अब इसका स्वरूप इतना विकराल हो चुका है कि यह हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को पूरी तरह से बिगाड़ रहा है।

इस बढ़ते तापमान का सीधा असर हमारे जल स्रोतों पर पड़ रहा है। हिमालय से लेकर आल्प्स तक के ग्लेशियर जिस खतरनाक गति से पिघल रहे हैं, वह आने वाले समय में दोहरी आपदा का संकेत है। शुरुआत में इन ग्लेशियरों के पिघलने से नदियों में विनाशकारी बाढ़ आएगी, लेकिन जैसे-जैसे ये बर्फ के भंडार खत्म होंगे, गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी बारहमासी नदियाँ केवल मौसमी नालों में तब्दील हो जाएंगी। यह कल्पना करना ही सिहरन पैदा करता है कि जब इन नदियों के किनारे बसी दुनिया की एक-चौथाई आबादी के पास पीने के लिए पानी नहीं होगा, तो किस तरह का सामाजिक और राजनैतिक संकट पैदा होगा। जल संकट केवल पीने के पानी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध हमारी खाद्य सुरक्षा से है। कृषि क्षेत्र पूरी तरह से मौसम के मिजाज पर निर्भर होता है। बढ़ती गर्मी के कारण मिट्टी की नमी खत्म हो रही है और परागण की प्रक्रिया बाधित हो रही है, जिससे गेहूं, चावल और मक्के जैसी मुख्य फसलों की पैदावार में भारी गिरावट आने की आशंका है। यदि अनाज का उत्पादन घटता है, तो वैश्विक स्तर पर भुखमरी और बढ़ती महंगाई गृहयुद्ध जैसे हालात पैदा कर सकती है।

इसके साथ ही, शहरीकरण के वर्तमान स्वरूप ने इस संकट को और अधिक गहरा बना दिया है। हमारे शहर आज कंक्रीट के जंगलों में बदल चुके हैं, जहाँ डामर की सड़कें और ऊंची इमारतें दिन भर सूरज की तपिश को सोखती हैं और रात में उसे गर्मी के रूप में उत्सर्जित करती हैं, जिससे 'अर्बन हीट आइलैंड' का निर्माण होता है। इन शहरों में रहने वाले करोड़ों लोगों के लिए एसी और कूलिंग सिस्टम अब लग्जरी नहीं बल्कि जरूरत बन गए हैं, लेकिन विडंबना यह है कि इन उपकरणों से निकलने वाली गर्मी और बिजली की भारी मांग फिर से उसी ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देती है जिससे हम बचने की कोशिश कर रहे हैं।

स्वास्थ्य के मोर्चे पर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। अत्यधिक गर्मी न केवल शारीरिक थकान और हीट स्ट्रोक का कारण बन रही है, बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य और कार्यक्षमता को भी प्रभावित कर रही है। नई तरह की बीमारियाँ और वेक्टर-जनित रोगों का प्रसार गर्म वातावरण में अधिक तेजी से हो रहा है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं पर अभूतपूर्व दबाव बढ़ रहा है। आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो बढ़ता तापमान वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा है। बाहरी काम करने वाले मजदूरों, किसानों और निर्माण श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी आने से उत्पादकता गिर रही है। भविष्य में यदि हमने इस तपती धरती को ठंडा करने के ठोस उपाय नहीं किए, तो दुनिया की जीडीपी का एक बड़ा हिस्सा केवल आपदा प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन में ही खर्च हो जाएगा।

हालाँकि, तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस दौर में हमारे पास कुछ उम्मीद की किरणें भी हैं। एआई के माध्यम से हम अब मौसम के मिजाज को अधिक सटीकता से समझ पा रहे हैं और ऊर्जा के बेहतर प्रबंधन की दिशा में काम कर रहे हैं, लेकिन तकनीक तब तक सफल नहीं होगी जब तक कि हमारे व्यवहार में परिवर्तन नहीं आएगा। हमें अपनी विकास की परिभाषा को बदलना होगा और ऐसी जीवनशैली अपनानी होगी जो प्रकृति के अनुकूल हो। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन जैसे विकल्पों को अब वैकल्पिक नहीं बल्कि अनिवार्य बनाना होगा।

यह समय केवल चर्चा करने या अंतरराष्ट्रीय मंचों पर वादे करने का नहीं है, बल्कि धरातल पर कड़े निर्णय लेने का है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ एक सुरक्षित और ठंडी धरती पर सांस ले सकें, तो हमें आज ही वनों के विनाश को रोकना होगा, जल संचयन को अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाना होगा और कार्बन उत्सर्जन को शून्य पर लाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करने होंगे। धरती का तपना मानवता के लिए अस्तित्व का प्रश्न है, और इसका समाधान केवल हमारे सामूहिक संकल्प में ही निहित है। प्रकृति हमें सुधारने का अवसर दे रही है, लेकिन यह अवसर सीमित है। यदि आज हमने अपनी जीवनशैली और नीतियों में क्रांतिकारी बदलाव नहीं किए, तो भविष्य की ये चुनौतियाँ एक ऐसी आग में बदल जाएंगी जिसे बुझाना फिर किसी के वश में नहीं होगा। ■

-मंगला नटराजन

महाराष्ट्र पर दोहरी मार - युद्ध की छाया और सूखे की आहट

महाराष्ट्र, जो भारत की अर्थव्यवस्था का इंजन माना जाता है, इस समय एक अत्यंत जटिल स्थिति के मुहाने पर खड़ा है। एक तरफ पश्चिम एशिया (ईरान-इजरायल) में गहराता युद्ध वैश्विक अस्थिरता पैदा कर रहा है, तो दूसरी तरफ मौसम विभाग की 'अल-नीनो' को लेकर दी गई चेतावनी ने राज्य के किसानों और प्रशासन की नींद उड़ा दी है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए आपातकालीन कमान संभाल ली है। यह केवल एक प्रशासनिक चुनौती नहीं, बल्कि महाराष्ट्र के लाखों लोगों के अस्तित्व और आजीविका का सवाल है।

भू-राजनीतिक तनाव और 'ईरान जंग' का असर

ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते सैन्य तनाव का असर केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है। इसकी लहरें अरब सागर को पार कर मुंबई के तटों और महाराष्ट्र के ग्रामीण अंचलों तक पहुँच रही हैं। ईरान के पास स्थित 'हॉर्मुज जलडमरूमध्य' (Strait of Hormuz) दुनिया के कच्चे तेल के व्यापार का मुख्य मार्ग है। युद्ध के कारण यदि यह मार्ग बाधित होता है, तो डीजल की कीमतें, परिवहन और खेती में उपयोग होने वाले डीजल के दाम बढ़ने से माल ढुलाई महंगी हो जाएगी। महाराष्ट्र के कोंकण तट के लाखों मछुआरे पहले से ही बढ़ते खर्चों से परेशान हैं; ईंधन महंगा होने से उनकी नावों के पहिए थम सकते हैं। युद्ध के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग असुरक्षित हो गए हैं। इसका सीधा असर खाद (Fertilizers) और अन्य कृषि रसायनों के आयात पर पड़ सकता है, जिससे आगामी खरीफ सीजन के लिए खेती की लागत बढ़ना तय है।

मानसून की डरावनी भविष्यवाणी - 'अल-नीनो' का साया

मौसम विभाग (IMD) की हालिया रिपोर्ट ने 'दक्षिण-पश्चिम मानसून' को लेकर जो संकेत दिए हैं, वे चिंताजनक हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस साल अल-नीनो का प्रभाव अत्यधिक सक्रिय रहेगा। अल-नीनो प्रशांत महासागर की वह स्थिति है जब समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। इसका सीधा असर भारत के मानसून चक्र पर पड़ता है, जिससे हवाएं कमजोर हो जाती हैं और बारिश कम होती है। मराठवाड़ा और विदर्भ ये क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से सूखे के प्रति संवेदनशील रहे हैं। कम बारिश का अर्थ है- फसलों की बर्बादी और पेयजल का गंभीर संकट। अनुमान है कि इस बार बारिश सामान्य (LPA) के ९०-९४% के बीच रहेगी, जो कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए 'रेड अलर्ट' है।

सरकार का 'एक्शन प्लान' और मुख्यमंत्री की सक्रियता

स्थितियों को भांपते हुए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मंत्रालय में हाई-लेवल बैठकों का दौर शुरू कर दिया है। सरकार इस संकट से निपटने के लिए त्रि-स्तरीय रणनीति पर काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने आदेश दिया है कि राज्य के सभी प्रमुख बांधों में उपलब्ध पानी को केवल पीने के लिए आरक्षित रखा जाए। 'जलयुक्त शिवार २.०' के माध्यम से गांवों में पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का काम युद्धस्तर पर शुरू किया गया है। सरकार किसानों को 'कम पानी में उगने वाली फसलों' (जैसे बाजरा और दलहन) की ओर रुख करने के लिए प्रेरित कर रही है। साथ ही, फसल बीमा (Crop Insurance) के दावों को त्वरित निपटाने के लिए एक डिजिटल पोर्टल को सक्रिय किया गया है। ईंधन की कीमतों के संभावित उछाल को देखते हुए, राज्य सरकार आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी रोकने के लिए सख्त निगरानी रख रही है ताकि आम जनता पर महंगाई का बोझ न बढ़े।

यह समय पैनिक (घबराहट) फैलाने का नहीं, बल्कि सतर्क रहने का है। विशेषज्ञों के अनुसार, नागरिक निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:

१. जल संरक्षणः पानी के प्रत्येक बूंद का सावधानी से उपयोग करें।

२. सजगताः सरकारी 'वेदर बुलेटिन' और कृषि सलाह पर ध्यान दें।

३. अफवाहों से बचेंः युद्ध या अकाल को लेकर सोशल मीडिया पर फैल रही भ्रामक खबरों पर विश्वास न करें।

महाराष्ट्र का इतिहास संघर्षों और बहादुरी का रहा है। चाहे वह १९७२ का भीषण सूखा हो या हालिया महामारी, इस राज्य ने हमेशा संकटों को मात दी है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का फ्रंट-फुट पर आकर नेतृत्व संभालना एक सकारात्मक संकेत है, लेकिन सफलता तभी मिलेगी जब शासन और जनता मिलकर इस 'डबल अटैक' (युद्ध और सूखा) का सामना करेंगे। 'सावधानी ही सुरक्षा है, और पूर्व-नियोजन ही संकट का समाधान है।'

जब गर्मी बन जाए संकटः मुंबई में बिजली की बढ़ती मांग और सिस्टम पर दबाव

रिपोर्टः विशेष फीचर

Mumbai–एक ऐसा शहर जो कभी रुकता नहीं। दिन हो या रात, यहां की रफ्तार लगातार चलती रहती है। लेकिन इन दिनों इस रफ्तार को एक अदृश्य दबाव धीमा करने लगा है–भीषण गर्मी और उससे पैदा हुई बिजली की बेतहाशा मांग। तापमान के बढ़ते ही शहर में एसी, कूलर और पंखों की आवाजें तेज हो गई हैं। हर घर, हर ऑफिस, हर दुकान में ठंडक की तलाश बढ़ी है। लेकिन इस तलाश ने एक नई चिंता को जन्म दिया है–क्या मुंबई का बिजली तंत्र इस बढ़ती मांग को संभाल पाएगा?

गर्मी का बढ़ता ग्राफ, बिजली की दौड़ती खपत

इस साल गर्मी ने अपने तेवर जल्दी दिखाने शुरू कर दिए। मार्च के आखिरी हफ्ते से ही तापमान सामान्य से ऊपर जाने लगा। अप्रैल आते-आते स्थिति यह हो गई कि दिन के साथ-साथ रातें भी गर्म रहने लगीं। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, शहरीकरण, कंक्रीट का फैलाव और हरित क्षेत्रों की कमी ने "हीट आइलैंड इफेक्ट" को बढ़ा दिया है। इसका मतलब यह है कि शहर अपने आसपास के इलाकों की तुलना में ज्यादा गर्म हो गया है।

इसका सीधा असर बिजली की

बिजली की मांग बढ़ना अपने आप में समस्या नहीं है, समस्या तब बनती है जब सप्लाई सिस्टम उसकी बराबरी नहीं कर पाता। विशेषज्ञों का कहना है कि मुंबई का पावर ग्रिड अभी तक स्थिति को संभाल रहा है, लेकिन यह अपनी क्षमता की सीमा के करीब पहुंच चुका है। ट्रांसफॉर्मर ओवरलोड हो रहे हैं। बिजली लाइनों पर दबाव बढ़ रहा है। ग्रिड को संतुलित रखना चुनौती बनता जा रहा है। अगर मांग इसी तरह बढ़ती रही, तो "ट्रिपिंग" यानी अचानक सप्लाई बंद होने की घटनाएं बढ़ सकती हैं।

खपत पर पड़ा है। ऊर्जा विभाग के आंकड़े बताते हैं कि इस बार बिजली की मांग ने पिछले कई वर्षों के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। दिन के समय तो खपत बढ़ती ही है, लेकिन अब रात में भी बिजली की मांग कम नहीं हो रही। पहले जहां रात में कुछ राहत मिलती थी, अब वहां भी एसी और पंखे लगातार चलते रहते हैं।

बढ़ती मांग के पीछे की असली वजहें

अगर इस स्थिति को सतही तौर पर देखें, तो लगेगा कि यह सिर्फ गर्मी का असर है। लेकिन गहराई में जाएं, तो कई परतें सामने आती हैं।

१. कूलिंग उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता
शहर में एसी का उपयोग तेजी से बढ़ा है। पहले जो घर सिर्फ पंखों से काम चला लेते थे, अब वहां भी एसी लगने लगे हैं।

२. 24 &s 7 चलती अर्थव्यवस्था
मुंबई की अर्थव्यवस्था कभी नहीं रुकती। ऑफिस, मॉल, कॉल सेंटर, फैक्ट्री–सब जगह लगातार बिजली की जरूरत होती है।

३. बढ़ती आबादी और शहरी विस्तार
हर साल शहर की आबादी बढ़ रही है। नए-नए रिहायशी और व्यावसायिक प्रोजेक्ट जुड़ रहे हैं, जिससे कुल मांग लगातार ऊपर जा रही है।

४. गर्म रातें–नई चुनौती
पहले रात में तापमान गिरता था, जिससे बिजली की मांग कम हो जाती थी। लेकिन अब रातें भी गर्म हैं, जिससे २४ घंटे खपत बनी रहती है।

सिस्टम पर दबाव

बिजली की मांग बढ़ना अपने आप में समस्या नहीं है, समस्या तब बनती है जब सप्लाई सिस्टम उसकी बराबरी नहीं कर पाता। विशेषज्ञों का कहना है कि मुंबई का पावर ग्रिड अभी तक स्थिति को संभाल रहा है, लेकिन यह अपनी क्षमता की सीमा के करीब पहुंच चुका है। ट्रांसफॉर्मर ओवरलोड हो रहे हैं। बिजली लाइनों पर दबाव बढ़ रहा है। ग्रिड को संतुलित रखना चुनौती बनता जा रहा है। अगर मांग इसी तरह बढ़ती रही, तो "ट्रिपिंग" यानी अचानक सप्लाई बंद होने की घटनाएं बढ़ सकती हैं। यह बड़े ब्लैकआउट का संकेत नहीं है, लेकिन छोटे-छोटे पावर कट लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर सकते हैं।

किन इलाकों में ज्यादा असर?

मुंबई एक समान नहीं है। यहां कुछ इलाके आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से लैस हैं, जबकि कुछ जगहों पर पुरानी व्यवस्था अब भी चल रही है।

ज्यादा जोखिम वाले क्षेत्रः

घनी आबादी वाले इलाके

पुराने रिहायशी क्षेत्र

औद्योगिक ज़ोन

इन इलाकों में बिजली की मांग ज्यादा होती है और इंफ्रास्ट्रक्चर अक्सर पुराना होता है, जिससे फॉल्ट की संभावना बढ़ जाती है। शहर की बिजली कंपनियां इस चुनौती से निपटने के लिए कई कदम उठा रही हैंः

अतिरिक्त बिजली खरीदना

ग्रिड की रियल-टाइम मॉनिटरिंग

इमरजेंसी रिपेयर टीम्स को अलर्ट पर रखना

बिजली खरीदी जा सकती है, लेकिन इंफ्रास्ट्रक्चर रातों-रात नहीं बदला जा सकता। अगर ट्रांसफॉर्मर और लाइनें अपनी सीमा तक पहुंच चुकी हैं, तो केवल अतिरिक्त सप्लाई भी समस्या का पूरा समाधान नहीं है। इस पूरी स्थिति का सबसे बड़ा असर आम नागरिक पर पड़ता है।

बिजली बिल में बढ़ोतरी

पावर कट से कामकाज प्रभावित

छोटे व्यवसायों को नुकसान

रात की नींद खराब

जो लोग एसी अफोर्ड नहीं कर सकते, उनके लिए स्थिति और कठिन हो जाती है। यह सिर्फ सुविधा का सवाल नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता का मुद्दा बन जाता है।

" दिन भर काम करने के बाद जब घर आता हूं, तो लगता है थोड़ी राहत मिलेगी... लेकिन अगर बिजली चली जाए, तो नींद भी नहीं आती..." यह कहना है दहिसर में रहने वाले एक मजदूर का, जो छोटे से कमरे में अपने परिवार के साथ रहता है। यह कहानी अकेली नहीं है–शहर के हजारों लोग इसी स्थिति से गुजर रहे हैं। यह समस्या सिर्फ मुंबई की नहीं है। यह समस्या देश के कई बड़े शहरों में देखने को मिल रही है। दिल्ली, अहमदाबाद, नागपुर जैसे शहर भी बढ़ती गर्मी और बिजली की मांग से जूझ रहे हैं। यानी यह एक नेशनल ट्रेंड बन चुका है समस्या का समाधान आसान नहीं है, लेकिन कुछ कदम जरूरी हैंः

बिजली खरीदी जा सकती है, लेकिन इंफ्रास्ट्रक्चर रातों-रात नहीं बदला जा सकता। अगर ट्रांसफॉर्मर और लाइनें अपनी सीमा तक पहुंच चुकी हैं, तो केवल अतिरिक्त सप्लाई भी समस्या का पूरा समाधान नहीं है। इस पूरी स्थिति का सबसे बड़ा असर आम नागरिक पर पड़ता है। बिजली बिल में बढ़ोतरी, पावर कट से कामकाज प्रभावित. छोटे व्यवसायों को नुकसान और रात की नींद खराब

इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडः पुरानी लाइनों और ट्रांसफॉर्मरों को बदलना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा पर जोरः सोलर और अन्य स्रोतों को बढ़ावा देना

ऊर्जा दक्षता (Energyed Efficiencyed) : कम बिजली खपत वाले उपकरणों का उपयोग

स्मार्ट ग्रिड सिस्टमः डिमांड और सप्लाई को बेहतर तरीके से मैनेज करना। मुंबई जैसे शहरों में समस्या अस्थायी नहीं है–यह हर साल दोहराई जाएगी। जब तक शहरी विकास और बिजली इंफ्रास्ट्रक्चर साथ-साथ नहीं बढ़ेंगे, तब तक गर्मी एक संकट बनती जाएगी। गर्मी हर साल आती है, लेकिन हर साल यह एक नई चुनौती भी लेकर आती है। मुंबई की कहानी हमें यह बताती है कि विकास की रफ्तार अगर इंफ्रास्ट्रक्चर से आगे निकल जाए, तो उसका दबाव आम आदमी को झेलना पड़ता है और इस बार भी लड़ाई सिर्फ तापमान से नहीं, बल्कि उस सिस्टम से है जो उसे संभालने की कोशिश कर रहा है।

महाराष्ट्र सरकार का बड़ा फैसलाः ठाणे-भिवंडी-कल्याण मेट्रो विस्तार के लिए ₹18,130 करोड़ मंजूर

महाराष्ट्र सरकार ने क्षेत्र की परिवहन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए मुंबई मेट्रो लाइन 5 और 5A के विस्तार को हरी झंडी दे दी है। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कमेटी की बैठक में इस परियोजना के लिए ₹१८,१३०.५५ करोड़ के संशोधित बजट को मंजूरी दी गई।

प्रमुख बिंदुः एक नजर में

१. कुल बजटः ₹18,130.55 करोड़ (संशोधित)।
२. कुल लंबाईः ३४.२ किलोमीटर का एकीकृत कॉरिडोर।
३. प्रभावित क्षेत्रः ठाणे, भिवंडी, कल्याण और अब उल्हासनगर।
४. स्टेशनों की संख्याः कुल १९ स्टेशन।

इस परियोजना को दो मुख्य हिस्सों में बांटा गया है ताकि काम की गति बनी रहेः

चरण १ (ठाणे से भिवंडी)ः कपूरबावड़ी से धामनकर नाका तक का यह हिस्सा लगभग पूरा होने वाला है। कम विस्थापन की वजह से इसका काम तेजी से निपटाया गया।

१. चरण 2 और 5A (भिवंडी से कल्याण-उल्हासनगर)ः भिवंडी और कल्याण के बीच सघन बस्तियों को बचाने के लिए मेट्रो को अंडरग्राउंड (भूमिगत) करने का फैसला लिया गया है। वहीं नई लाइन 5A अब दुर्गड़ी से होते हुए आधारवाड़ी, खड़कपाड़ा और अंततः उल्हासनगर को जोड़ेगी।

भिवंडी में ट्रैफिक की समस्या को देखते हुए रंजनोली जंक्शन और दुर्गड़ी चौक के बीच एक 'डबल-डेकर' संरचना बनाई जाएगी। इसमें निचले स्तर पर फ्लाईओवर (सड़क) और ऊपरी स्तर पर मेट्रो ट्रैक होगा, जिससे जमीन का कम से कम इस्तेमाल कर अधिकतम सुविधा दी जा सके। ठाणे से कल्याण के बीच यात्रा का समय ४० से ५० प्रतिशत तक कम हो जाएगा। बेहतर कनेक्टिविटी से करीब ६९ लाख निवासियों को सीधा लाभ मिलेगा।

निजी वाहनों के बजाय मेट्रो का उपयोग बढ़ने से सड़कों पर ट्रैफिक और प्रदूषण कम होगा। विशेषज्ञ के अनुसार 'यह विस्तार केवल एक मेट्रो लाइन नहीं, बल्कि मुंबई महानगर क्षेत्र (MMR) की लाइफलाइन साबित होगा। भिवंडी जैसे औद्योगिक और कल्याण जैसे आवासीय क्षेत्रों को जोड़ने से आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।' मेट्रो के इस संशोधित प्लान से उन हजारों इमारतों को तोड़ने से बचा लिया गया है जो पुराने नक्शे की वजह से खतरे में थीं। अब भूमिगत मार्ग के जरिए विकास और विरासत दोनों को साथ लेकर चलने की तैयारी है।

४७,००० जुर्म और २४५ साल की सजा! MS-१३ गैंग का हुआ अंत?

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी एक गैंग ने मिलकर ४७,००० से ज्यादा जुर्म किए हों? जी हां, दुनिया के सबसे खतरनाक 'मौत के सौदागरों' का हिसाब अब शुरू हो चुका है। MS-१३ गैंग के ४८६ गैंगस्टर्स को अब एक साथ कटघरे में खड़ा किया गया है। अल सल्वाडोर में जुर्म की दुनिया के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कानूनी स्ट्राइक हुई है। एक साथ ४८६ गैंगस्टर्स पर ट्रायल शुरू हुआ है, जो दुनिया के न्यायिक इतिहास में एक दुर्लभ घटना है। इस गैंग पर हत्या, अपहरण, जबरन वसूली और नशीले पदार्थों की तस्करी जैसे कुल ४७,००० जुर्मों का आरोप है। इंसाफ की तराजू ने इन अपराधियों के लिए २४५ साल तक की जेल की सजा मुकर्रर की है।

यह उन पीड़ितों के लिए एक बड़ी जीत मानी जा रही है जो दशकों से इस आतंक के साये में जी रहे थे। MS-१३ को दुनिया का सबसे हिंसक गैंग माना जाता है। इनके शरीर पर बने टैटू और इनकी क्रूरता ही इनकी पहचान थी, लेकिन अब ये सलाखों के पीछे अपने अंजाम का सामना कर रहे हैं। कानून के इस सख्त रुख ने पूरी दुनिया को एक कड़ा संदेश दिया है कि जुर्म का रास्ता चाहे कितना भी लंबा क्यों न हो, उसका अंत जेल की कोठरी में ही होता है।

यह उन पीड़ितों के लिए एक बड़ी जीत मानी जा रही है जो दशकों से इस आतंक के साये में जी रहे थे। MS-१३ को दुनिया का सबसे हिंसक गैंग माना जाता है। इनके शरीर पर बने टैटू और इनकी क्रूरता ही इनकी पहचान थी, लेकिन अब ये सलाखों के पीछे अपने अंजाम का सामना कर रहे हैं। कानून के इस सख्त रुख ने पूरी दुनिया को एक कड़ा संदेश दिया है कि जुर्म का रास्ता चाहे कितना भी लंबा क्यों न हो, उसका अंत जेल की कोठरी में ही होता है।

जब इंसान की उम्र ही ७०-८० साल होती है, तो उसे २४५ साल की सजा देने का क्या मतलब?

इसके पीछे का कानूनी लॉजिक (Legal Logic) बहुत दिलचस्प है, जिसे मुख्य रूप से दो पॉइंट्स में समझा जा सकता है:

१. हर जुर्म की अलग सजा (Consecutive Sentencing)

विदेशों में, खासकर अमेरिका और अल सल्वाडोर जैसे देशों में, सजा को जोड़ा (Stack) जाता है। मान लीजिए एक अपराधी ने ५ अलग-अलग हत्याएं कीं और हर हत्या के लिए उसे ५० साल की सजा मिली। वहां का कानून इन सजाओं को एक साथ नहीं चलाता (Concurrent नहीं रखता), बल्कि उन्हें जोड़ देता है (Consecutive)।

गणित के हिसाब से: 50×5=250 साल।

कानून का मकसद यह दिखाना होता है कि उसने जितने जुर्म किए, उसे हर एक जुर्म की पूरी सजा मिली है।

२. 'पेरोल' (Parole) की गुंजाइश खत्म करना

अगर किसी को केवल ५० साल की सजा दी जाए, तो अच्छे व्यवहार की वजह से उसे २०-२५ साल बाद 'पेरोल' पर रिहा किया जा सकता है। लेकिन जब सजा २४५ साल की होती है, तो अगर अपराधी को कुछ सालों की छूट मिल भी जाए, तब भी उसके पास इतने साल बच जाते हैं कि वह अपनी पूरी जिंदगी जेल के अंदर ही खत्म करे।

३. सांकेतिक न्याय (Symbolic Justice)

इतनी लंबी सजा एक संदेश (Message) होती है:

पीड़ितों के लिए: यह समाज को बताता है कि अपराधी का जुर्म इतना बड़ा था कि उसे कई

जन्मों तक जेल में रहना चाहिए।

अपराधियों के लिएः यह एक खौफ पैदा करने के लिए होता है कि कानून के शिकंजे से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

आसान शब्दों में २४५ साल का मतलब यह नहीं कि पुलिस को उम्मीद है कि वो २४५ साल जिएगा, बल्कि इसका मतलब है कि उसे मरते दम तक जेल से बाहर आने का एक भी मौका नहीं दिया जाएगा।

पैरोल (Parole) का सरल अर्थ है–कैदी को उसकी सजा पूरी होने से पहले कुछ खास शर्तों पर जेल से अस्थायी (Temporary) रूप से रिहा करना। इसे आप एक तरह का 'सशर्त अवकाश' कह सकते हैं। यहाँ इसकी पूरी प्रक्रिया और मतलब आसान शब्दों में दिया गया हैः

पैरोल क्यों दी जाती है?

कानून का मानना है कि जेल सिर्फ सजा देने के लिए नहीं, बल्कि इंसान को सुधारने के लिए भी है। पैरोल देने के मुख्य कारण ये होते हैं पारिवारिक कारण परिवार में किसी की गंभीर बीमारी, मृत्यु या शादी (जैसे भाई, बहन या बच्चे की शादी)। दूसरा सामाजिक जुड़ाव ताकि कैदी समाज और अपने परिवार से पूरी तरह न कटे। अगर जेल में कैदी का आचरण बहुत अच्छा है, तो उसे इनाम के तौर पर कुछ दिन बाहर बिताने का मौका मिलता है।

पैरोल की प्रक्रिया (Steps)

पैरोल मिलना कोई 'अधिकार' नहीं है, बल्कि यह प्रशासन का 'विशेषाधिकार' है। इसकी प्रक्रिया कुछ ऐसी होती हैः

आवेदन (Application)ः कैदी या उसका परिवार जेल अधीक्षक (Jail Superintendent) को आवेदन देता है।

जांच (Verification): जेल प्रशासन उस राज्य के गृह विभाग या स्थानीय पुलिस को यह आवेदन भेजता है। पुलिस जांच करती है कि क्या कैदी के बाहर आने से समाज को कोई खतरा तो नहीं है।

गारंटी (Surety): कैदी को एक 'बॉन्ड' भरना पड़ता है और किसी जिम्मेदार व्यक्ति (Surerity) की गारंटी देनी होती है कि वह समय पर वापस जेल आएगा।

मंजूरीः रिपोर्ट पॉजिटिव होने पर प्रशासन एक निश्चित समय (जैसे १५ दिन या १ महीना) के लिए पैरोल मंजूर करता है।

पैरोल की शर्तें

बाहर रहने के दौरान कैदी पूरी तरह आजाद नहीं होता-

१. उसे रोज या हफ्ते में एक बार पास के पुलिस स्टेशन में हाजिरी देनी होती है।
२. वह शहर या राज्य छोड़कर नहीं जा सकता।
३. उसे किसी भी तरह की आपराधिक गतिविधि या पीड़ित परिवार से मिलने की मनाही होती है।

पैरोल और फर्लो (Furlough) में अंतर-अक्सर लोग इन दोनों में कन्फ्यूज हो जाते हैं।

पैरोलः यह किसी ठोस कारण (जैसे शादी या बीमारी) के लिए दी जाती है। प्रशासन इसे मना भी कर सकता है।

फर्लोः यह लंबी सजा वाले कैदियों को दी जाती है ताकि वे अपना मानसिक संतुलन बनाए रखें। इसके लिए किसी खास कारण की जरूरत नहीं होती, यह उनके अच्छे व्यवहार का अधिकार माना जाता है।

एक जरूरी बात, बहुत ही गंभीर अपराधी (जैसे आतंकी या नरसंहार करने वाले) को आमतौर पर पैरोल नहीं दी जाती। इसीलिए २४५ साल जैसी सजाओं में पैरोल की गुंजाइश लगभग खत्म कर दी जाती है ताकि अपराधी कभी बाहर न आ सके।

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

- **Location:** Mumbal (Field + Office)
- **Employment Type:** Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**
To: **9082391833**

SWARNIM
MUMBAI

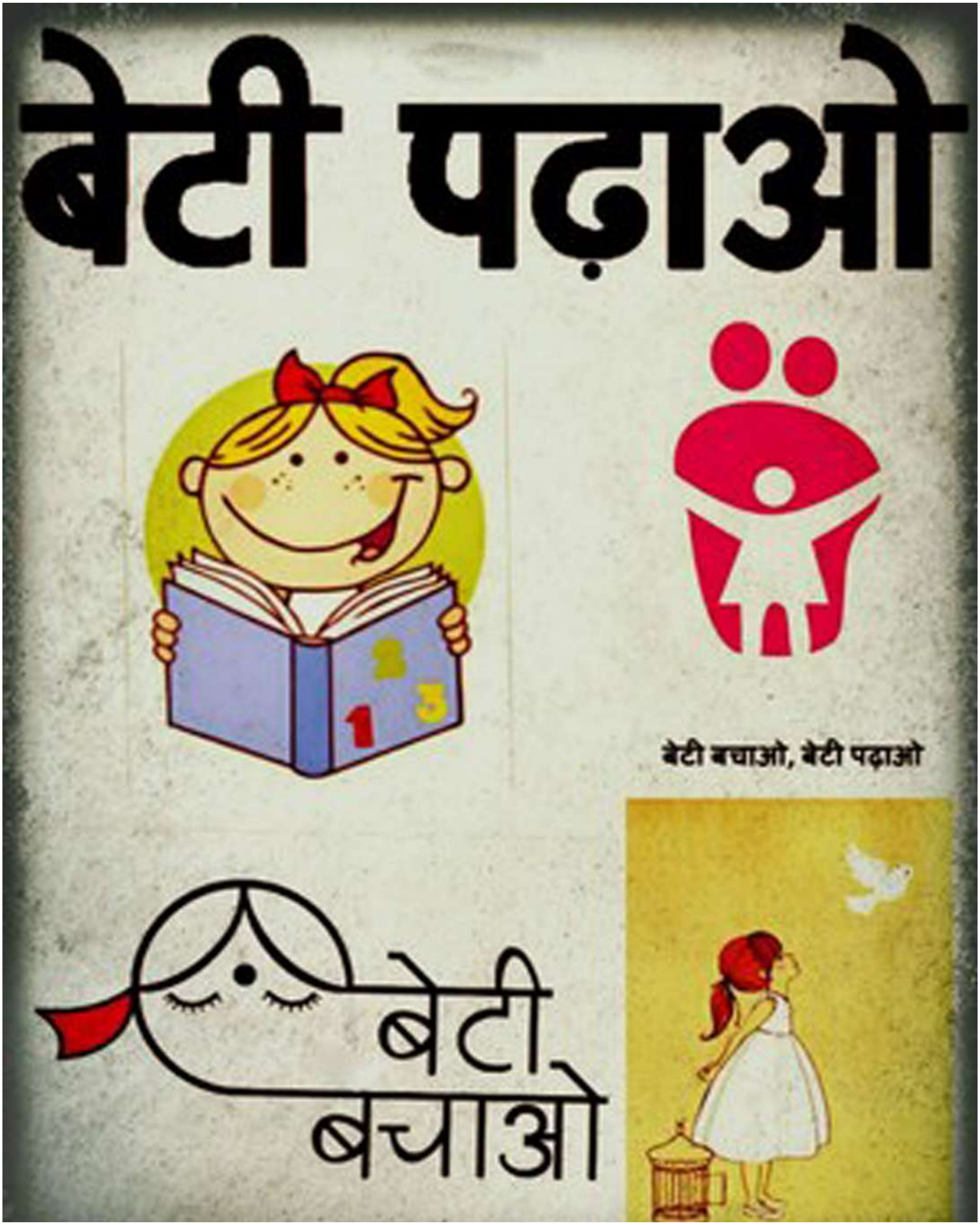
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

दुनिया के टॉप 'मीथेन हॉटस्पॉट' मुंबई और सिकंदराबाद

हाल ही में जारी हुए सैटेलाइट डेटा ने पूरी दुनिया को चौंका दिया है। UCLA (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया) और अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण संगठनों की एक ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार, भारत के दो प्रमुख शहर– मुंबई और सिकंदराबाद– दुनिया के टॉप २५ सबसे ज़्यादा मीथेन गैस उत्सर्जित करने वाले लैंडफिल (कूड़े के ढेर) साइट्स में शामिल हो गए हैं।

रिपोर्ट के मुख्य आंकड़े:

सिकंदराबाद (जवाहर नगर लैंडफिल): यह साइट वैश्विक सूची में चौथे (4th) स्थान पर है। यहाँ से हर घंटे करीब ५.९ टन मीथेन गैस का उत्सर्जन हो रहा है।

मुंबई (कांजुरमार्ग लैंडफिल): आर्थिक राजधानी मुंबई का यह डंपिंग ग्राउंड दुनिया में १२वें नंबर पर आता है। यहाँ प्रति घंटा ४.९ टन मीथेन निकल रही है।

मीथेन गैस, कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) की तुलना में वातावरण को गर्म करने में ८० गुना अधिक शक्तिशाली है। यह सीधे तौर पर जलवायु परिवर्तन (Climate Change) को

५ टन प्रति घंटा मीथेन का उत्सर्जन पर्यावरण को उतना ही नुकसान पहुँचाता है जितना कि सड़कों पर एक साथ १० लाख डीजल/पेट्रोल गाड़ियाँ (SUVs) धुआं छोड़ रही हों। प्रशासन और नगर निगमों के लिए यह एक 'वेक-अप कॉल' है। जब तक हम कचरे को अलग-अलग (Gilling & Dry waste) नहीं करेंगे और आधुनिक 'वेस्ट-टू-एनर्जी' तकनीक का उपयोग नहीं करेंगे, यह खतरा बढ़ता ही जाएगा।

बढ़ावा दे रही है। इतने बड़े पैमाने पर गैस का रिसाव आसपास रहने वाले लोगों के लिए सांस की बीमारियां और हवा की गुणवत्ता (AQI) खराब होने का मुख्य कारण बन रहा है। यह डेटा स्पष्ट करता है कि हमारे शहरों में कचरे का सही तरीके से निपटारा नहीं हो पा रहा है। कचरे के पहाड़ों के नीचे दबकर बन रही यह गैस कभी भी बड़ी आग या विस्फोट का कारण बन सकती है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि ५ टन प्रति घंटा मीथेन का उत्सर्जन पर्यावरण को उतना ही नुकसान पहुँचाता है जितना कि सड़कों पर एक साथ १० लाख डीजल/पेट्रोल गाड़ियाँ (SUVs) धुआं छोड़ रही हों। प्रशासन और नगर निगमों के लिए यह एक 'वेक-अप कॉल' है। जब तक हम कचरे को अलग-अलग (Gilling & Dry waste) नहीं करेंगे और आधुनिक 'वेस्ट-टू-एनर्जी' तकनीक का उपयोग नहीं करेंगे, यह खतरा बढ़ता ही जाएगा।

आसान शब्दों में कहें तो, यह कचरे के ढेरों को खत्म करने और साथ ही ऊर्जा बनाने का एक स्मार्ट तरीका है। यहाँ इसके मुख्य तरीके और काम करने की प्रक्रिया दी गई है:

१. कचरे से ऊर्जा बनाने के मुख्य तरीके

दहन (Incineration): इसमें कचरे को बहुत ऊंचे तापमान पर जलाया जाता है। इससे निकलने वाली गर्मी से पानी उबालकर भाप (Steam) बनाई जाती है, जो टरबाइन घुमाकर बिजली पैदा करती है।

बायो-मेथेनेशन (Biomethanation): गीले कचरे (जैसे खाने-पीने का सामान, फल-सब्जियों के छिलके) को बिना हवा के सड़ाया जाता है, जिससे बायोगैस बनती है। इस गैस का इस्तेमाल खाना पकाने या बिजली बनाने में होता है।

गैसीफिकेशन (Gasification): इसमें कचरे को बिना जलाए, ऑक्सीजन की सीमित मात्रा में गर्म किया जाता है, जिससे 'सिनगैस' (Syngas) निकलती है। यह गैस ईंधन के रूप में इस्तेमाल होती है।

यह कैसे काम करता है?

कचरा इकट्ठा करना: शहरों से निकलने वाले कचरे को प्लांट तक लाया जाता है।

छंटाई (Sorting): सबसे पहले कचरे में से लोहा, कांच और पत्थर जैसी चीजें अलग की जाती हैं जो जल नहीं सकतीं।

ऊर्जा उत्पादन: बचे हुए कचरे को जलाया जाता है या केमिकल प्रोसेस से गुजारा जाता है।

प्रदूषण नियंत्रण: कचरा जलने से निकलने वाले धुएं को फिल्टर किया जाता है ताकि जहरीली गैसें हवा में न मिलें।

बिजली की आपूर्ति: पैदा हुई बिजली को ग्रिड के जरिए घरों और फैक्ट्रियों तक पहुँचाया जाता है।

इसके फायदे क्या हैं?

लैंडफिल की समस्या का समाधान: कचरे के बड़े-बड़े पहाड़ (जैसे मुंबई या सिकंदराबाद में हैं) कम हो जाते हैं।

ग्रीनहाउस गैसों में कमी: अगर कचरा खुले में सड़ता है, तो बहुत ज़्यादा मीथेन निकलती है। WtE तकनीक इस मीथेन को कंट्रोल करके ऊर्जा में बदल देती है।

स्वच्छ ऊर्जा: यह कोयले जैसे जीवाश्म ईंधन पर हमारी निर्भरता को कम करता है।

चुनौतियां

यह तकनीक सुनने में जितनी अच्छी है, इसे लागू करना उतना ही महंगा होता है। इसके अलावा, अगर कचरे को सही से छांटा (Segregation) न जाए, तो इसे जलाना मुश्किल होता है और इससे निकलने वाला धुआं पर्यावरण को नुकसान पहुँचा सकता है।

भारत में नई दिल्ली (ओखला), पुणे और हैदराबाद जैसे शहरों में इस तरह के प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है ताकि कचरे की समस्या को बिजली की जरूरत से जोड़ा जा सके।

जब तक घर-घर से कचरा अलग होकर नहीं निकलेगा, तब तक ये प्लांट सफल नहीं होंगे। हम इस समस्या का समाधान पा सकते हैं और धीरे-धीरे भारत में इसकी शुरुआत हो चुकी है। अगर हम कचरे को 'कचरा' नहीं बल्कि 'संसाधन' (Resource) की तरह देखें, तो यह देश की ऊर्जा की किल्लत दूर करने में बहुत बड़ा रोल निभा सकता है। क्या आपको लगता है कि आपके इलाके में कचरे को अलग-अलग करने के लिए लोग जागरूक हैं?

हमारे पास कचरे के रूप में 'मुफ्त का ईंधन' मौजूद है, तो हम इसका उपयोग अपनी ऊर्जा और गैस की कमी को पूरा करने के लिए क्यों नहीं कर पा रहे?

दरअसल, इस समाधान और हकीकत के बीच कुछ बड़ी चुनौतियां (Challenges) हैं, जिनकी वजह से इसे पूरे देश में बड़े पैमाने पर लागू करना थोड़ा मुश्किल हो रहा है:

१. कचरे का पृथक्करण (Waste Segregation) न होना

वेस्ट-टू-एनर्जी प्लांट के लिए सबसे बड़ी जरूरत है 'सूखा' और 'गीला' कचरा अलग होना। भारत में घरों से निकलने वाला कचरा मिक्स होता है जिसमें प्लास्टिक, खाने का सामान, कांच और लोहा सब एक साथ होता है। गीले कचरे को जलाना मुश्किल होता है और वह ऊर्जा कम देता है, जिससे प्लांट की मशीनें खराब हो जाती हैं या उतनी बिजली नहीं बना पातीं जितनी मिलनी चाहिए।

२. प्लांट लगाने का भारी खर्च (High Setup Cost)

इन प्लांट्स को बनाने और चलाने की तकनीक बहुत महंगी है। कोयले से बिजली बनाने के मुकाबले कचरे से बिजली बनाना काफी महंगा पड़ता है। सरकारी सब्सिडी के बिना ये कंपनियां घाटे में चली जाती हैं।

३. कचरे की 'कैलोरीफिक वैल्यू' कम होना

ऊर्जा बनाने के लिए कचरे का 'ज्वलनशील' होना जरूरी है। भारतीय कचरे में मिट्टी, पत्थर और नमी (Moisture) की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। इससे उसे जलाने के लिए एक्स्ट्रा ईंधन की जरूरत पड़ती है, जो इस पूरी प्रक्रिया को और खर्चीला बना देता है।

४. प्रदूषण का डर (Pollution Concerns)

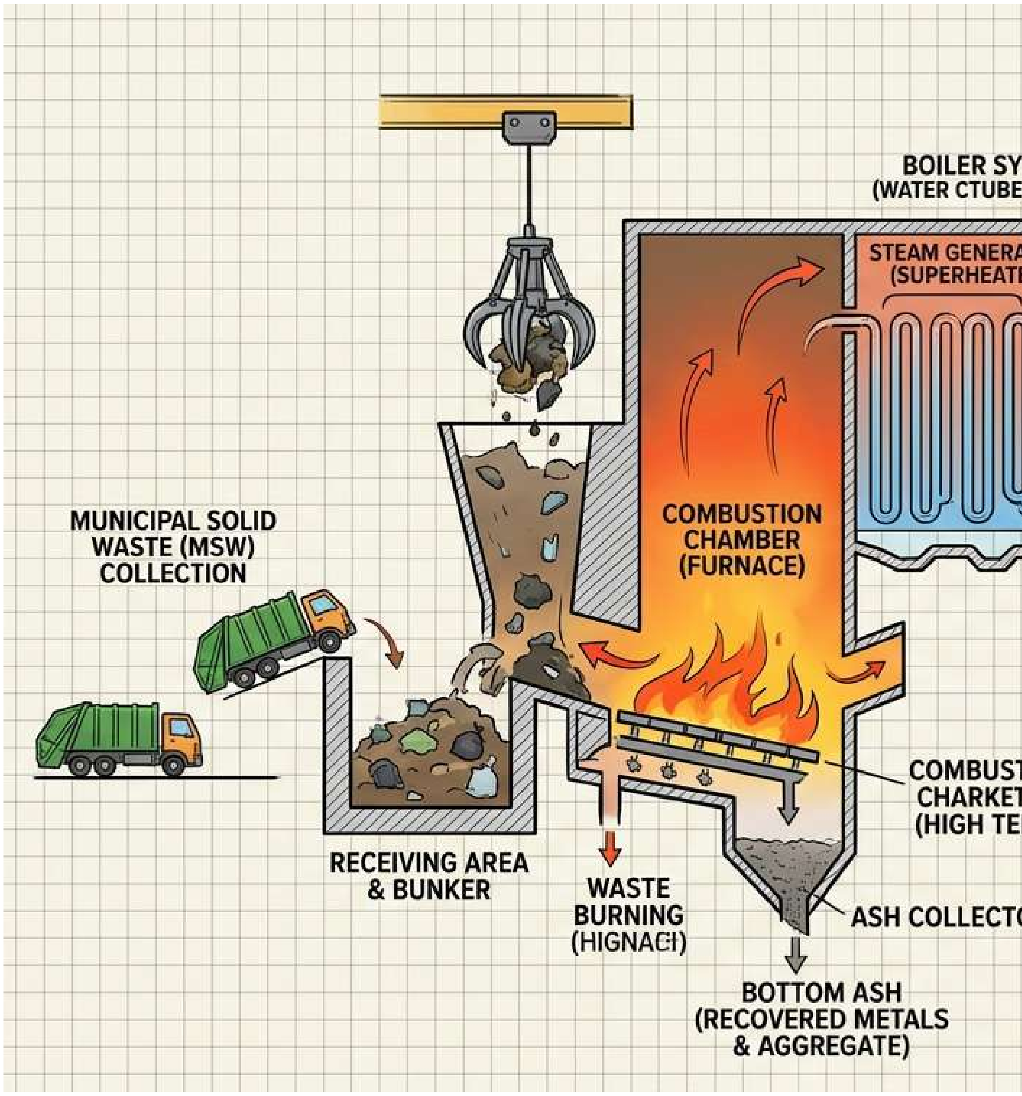

अगर कचरे को सही तापमान पर और सही फिल्टर के बिना जलाया जाए, तो उससे Dioxins जैसी जहरीली गैसें निकल सकती हैं। कई बार रिहायशी इलाकों के पास ऐसे प्लांट लगाने पर स्थानीय लोग विरोध करते हैं क्योंकि उन्हें जहरीले धुएं का डर रहता है। अगर हम इस तकनीक का पूरा फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमें कुछ बदलाव करने होंगे।

कम्प्रेस्ड बायोगैस (CBG): अब सरकार 'SATAT' जैसी योजनाएं ला रही है, जहाँ गीले कचरे से सीधे बायोगैस बनाई जा रही है। यह बिजली बनाने से ज्यादा आसान और सस्ता है।

वेस्ट-टू-फ्यूल: कचरे से 'RDF' (Refuse Derived Fuel) बनाना, जिसका इस्तेमाल सीमेंट फैक्ट्रियों में कोयले की जगह किया जा सके।

शक्तिशाली कानून: जब तक घर-घर से कचरा अलग होकर नहीं निकलेगा, तब तक ये प्लांट सफल नहीं होंगे।

हम इस समस्या का समाधान पा सकते हैं और धीरे-धीरे भारत में इसकी शुरुआत हो चुकी है। अगर हम कचरे को 'कचरा' नहीं बल्कि 'संसाधन' (Resource) की तरह देखें, तो यह देश की ऊर्जा की किल्लत दूर करने में बहुत बड़ा रोल निभा सकता है। क्या आपको लगता है कि आपके इलाके में कचरे को अलग-अलग करने के लिए लोग जागरूक हैं?

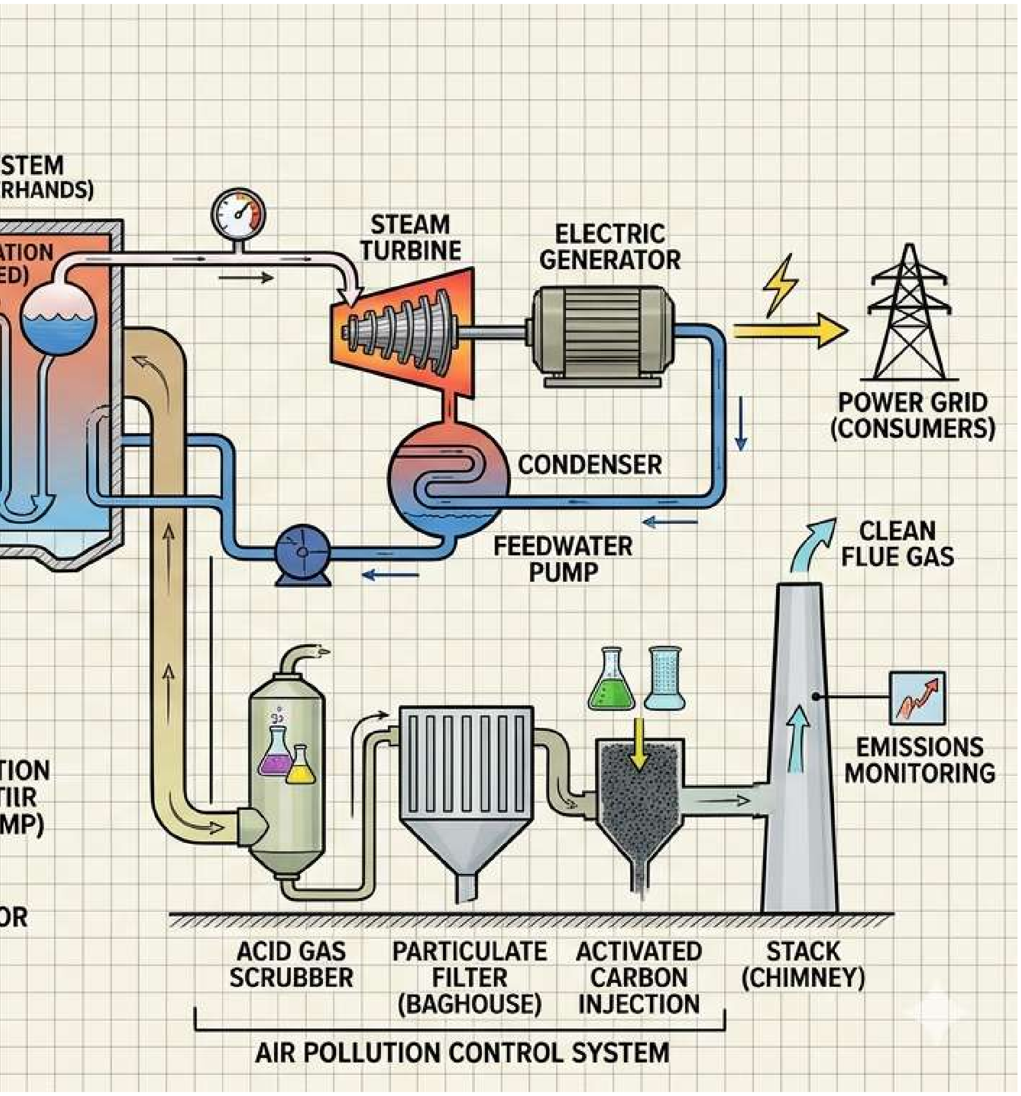

वेस्ट-टू-एनर्जी (WtE) सिस्टम: कचरे से ऊर्जा बनाने की प्रक्रिया

कचरा संग्रह: कचरे को इकट्ठा किया जाता है।

कचरा पृथक्करण: कचरे को छांटा जाता है।
WtE प्लांट: कचरे को WtE प्लांट में लाया जाता है।

छंटाई और तैयारी: कचरे को जलाने के लिए तैयार किया जाता है।

दहन: कचरे को जलाया जाता है।
भाप उत्पादन: जलते हुए कचरे की गर्मी से भाप पैदा होती है।
टरबाइन और जनरेटर: भाप टरबाइन को घुमाती है, जो जनरेटर को चलाता है।
बिजली वितरण:बिजली को ग्रिड के माध्यम से घरों और व्यवसायों तक पहुँचाया जाता है।
प्रदूषण नियंत्रण:
प्लांट से निकलने वाले धुएं को साफ किया जाता है।

फायदे:
लैंडफिल में कचरे को कम करना:
लैंडफिल में कचरे की मात्रा कम होती है।
बिजली उत्पादन: बिजली का उत्पादन होता है।
ग्रीनहाउस गैसों में कमी:
मीथेन गैस के उत्सर्जन को कम करता है।

चुनौतियां:
लागत: WtE प्लांट बहुत महंगे होते हैं।
प्रदूषण: कचरे को जलाने से प्रदूषण हो सकता है।
जनता का विरोध: कुछ लोग WtE प्लांट के निर्माण का विरोध करते हैं।

वेज पुलाव

सामग्रीः
१ कप बासमती चावल,
कटी हुई सब्जियां (गाजर, मटर, बीन्स, आलू),
१ प्याज, अदरक-लहसुन पेस्ट,
खड़े मसाले (तेजपत्ता, दालचीनी, लौंग),
नमक और घी।

विधिः चावल को २० मिनट के लिए भिगो दें। कुकर में घी गरम करें और खड़े मसाले व प्याज भूनें। अदरक-लहसुन पेस्ट और सारी सब्जियां डालकर २ मिनट पकाएं। चावल और २ कप पानी डालकर नमक मिलाएं। एक सीटी आने तक पकाएं और फिर गरमा-गरम रायते के साथ परोसें।

सूजी का उपमा

सामग्रीः
१ कप सूजी (रवा),
१ बारीक कटा प्याज,
१ हरी मिर्च,
थोड़े से मूंगफली के दाने,
राई, करी पत्ता,
नींबू का रस और नमक।

विधिः सूजी को हल्का सुनहरा होने तक भून लें और अलग रख दें। कड़ाही में तेल गरम करें, उसमें राई, करी पत्ता, मिर्च और मूंगफली भूनें। प्याज डालकर पारदर्शी होने तक पकाएं। कप पानी और नमक डालें। जब पानी उबलने लगे, तो धीरे-धीरे सूजी डालते हुए हिलाते रहें ताकि गांठ न बने। ढककर २ मिनट पकाएं और नींबू का रस डालकर सर्व करें।

पनीर टिक्का

सामग्रीः
२०० ग्राम पनीर (क्यूब्स में),
दही,
बेसन,
लाल मिर्च पाउडर,
गरम मसाला,
नींबू का रस,
शिमला मिर्च और प्याज के टुकड़े।

विधिः एक बाउल में दही, बेसन और सारे मसाले मिलाकर गाढ़ा घोल बना लें। इसमें पनीर, प्याज और शिमला मिर्च डालकर अच्छी तरह कोट करें और ३० मिनट के लिए छोड़ दें। एक नॉन-स्टिक तवे पर हल्का तेल लगाएं और पनीर के टुकड़ों को चारों तरफ से सुनहरा होने तक सेकें। चाट मसाला छिड़कें और हरी चटनी के साथ परोसें।

बैंगन का साग

सामग्रीः-
4 कप बैंगन, गोलटुकड़ों में कटा हुआ
1/2 चम्मच हल्दी पाउडर
1 चम्मच सरसों
2 चम्मच तिल
1 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
4 चम्मच बेसन
2 चम्मच काजू, टुकड़ों में
8-10 किशमिश
1 कप तेल
एक चुटकी शक्कर
नमक स्वादानुसार

विधिः सबसे पहले बैंगन के स्लाईस में नमक और हल्दी डालकर 15 मिनट के लिए एकतरफ रख दें। अब एक एक चौड़े नॉन-स्टिक पैन में तेल गरम करें और उसमें सरसों-तिल डालकर फ्राई करें। जब बीज चटकने लगे तो उसमें लाल मिर्च पाउडर, बेसन, शक्कर, काजू और किशमिश डालकर अच्छी तरह मिलाएं और २ मिनट तक मीडियम आंच पर पकाएं। तैयार मसाले में बैंगन डालकर अच्छी तरह मिलाएं और धीमी आंच पर 10 मिनट तक पकाएं। बैंगन के साग को बीच-बीच में चलाते रहें। गरमा गरम बैंगन का साग तैयार है। पराठे या फिर रोटी के साथ सर्व करें।

नवरतन पुलाव

सामग्री-
१ प्याला बासमती चावल, आधा घंटा पानी में भिगो कर रखें।
१५ ग्राम घी
१ छोटा चम्मच जीरा साबुत
७ लौंग
२ छोटी पत्तियाँ तेजपात
१ बड़ी इलायची के दाने
आधा प्याला प्याज़ महीन कटी हुई
आधा प्याला पनीर कसा हुआ,
गोभी महीन कटा हुआ,
१५ काजू ,१५ बादाम
१० बड़े मखाने साफ कर के आधे काट लें
२० किशमिश
नमक स्वादानुसार थोड़ा हल्का
केवड़ा जल
गरम मसाला पिसा हुआ एक छोटा चम्मच

विधिः चावल धोएँ। दो प्याले पानी और नमक डाल कर नर्म होने तक पकाएँ। ज़ीरा, लौंग, इलायची और कालीमिर्च को मोटा कूट लें। कढ़ाई गरम करें और मेवे सूखे भून कर निकाल लें जिससे कुरकुरे हो जाएँ। कढ़ाई में घी डालें, तेजपात का तड़का दें, प्याज मिलाएँ, कुटा हुआ मसाला डालें, पनीर मिलाएँ, हल्का गुलाबी होने तक पकाएँ। आँच धीमी करें और इस मिश्रण में भी स्वादानुसार नमक मिला दें।
चावल मिलाएँ, पिसा हुआ गरम मसाला छिड़कें, मेवा व केवड़ा जल छिड़क कर गरमा-गरम परोसें।

चंद्रयान-४: चांद से मिट्टी लाने की तैयारी, इसरो रचने जा रहा है एक और वैश्विक इतिहास

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराने के बाद, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) अब अपने सबसे साहसी और जटिल मिशन 'चंद्रयान-४' की ओर बढ़ रहा है। मई २०२६ की ताजा रिपोर्टों के अनुसार, इसरो ने इस मिशन के लिए उन महत्वपूर्ण तकनीकों का सफल परीक्षण कर लिया है, जो भारत को दुनिया के उन चुनिंदा देशों की कतार में खड़ा कर देंगी, जिन्होंने चंद्रमा से नमूने वापस धरती पर लाने की क्षमता हासिल की है। यह मिशन न केवल इसरो की तकनीकी श्रेष्ठता को साबित करेगा, बल्कि २०४० तक चंद्रमा पर भारतीय मानव भेजने के सपने की नींव भी रखेगा।

चंद्रयान-४ मिशन पिछले मिशनों की तुलना में काफी अलग और चुनौतीपूर्ण है। जहाँ चंद्रयान-३ एक 'वन-वे' यात्रा थी, वहीं चंद्रयान-४ एक 'रिटर्न टिकट' के साथ जाएगा। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा की सतह से लगभग २ से ३ किलोग्राम मिट्टी और चट्टानों के नमूने (Lunar Samples) इकट्ठा करना और उन्हें सुरक्षित रूप से धरती पर वापस लाना है। इस जटिल प्रक्रिया को पूरा करने के लिए इसरो ने एक अनूठा खाका तैयार किया है। भारी वजन और जटिलता के कारण, इस पूरे मिशन को दो अलग-अलग हिस्सों में दो शक्तिशाली एलवीएम-३ (LVM3) रॉकेटों के जरिए अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। अंतरिक्ष की कक्षा में ये दोनों हिस्से आपस में जुड़ेंगे (Space Docking), जो भारत के लिए एक नई और अभूतपूर्व तकनीकी उपलब्धि होगी।

चंद्रयान-४ मिशन पिछले मिशनों की तुलना में काफी अलग और चुनौतीपूर्ण है। जहाँ चंद्रयान-३ एक 'वन-वे' यात्रा थी, वहीं चंद्रयान-४ एक 'रिटर्न टिकट' के साथ जाएगा। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा की सतह से लगभग २ से ३ किलोग्राम मिट्टी और चट्टानों के नमूने (Lunar Samples) इकट्ठा करना और उन्हें सुरक्षित रूप से धरती पर वापस लाना है। इस जटिल प्रक्रिया को पूरा करने के लिए इसरो ने एक अनूठा खाका तैयार किया है। भारी वजन और जटिलता के कारण, इस पूरे मिशन को दो अलग-अलग हिस्सों में दो शक्तिशाली एलवीएम-३ (LVM3) रॉकेटों के जरिए अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। अंतरिक्ष की कक्षा में ये दोनों हिस्से आपस में जुड़ेंगे (Space Docking), जो भारत के लिए एक नई और अभूतपूर्व तकनीकी उपलब्धि होगी।

इसरो के वैज्ञानिकों ने इस मिशन के लिए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास स्थित 'मोंस मुउटन' क्षेत्र को लैंडिंग के लिए चुना है। यह वही इलाका है जहाँ भविष्य में पानी और खनिज मिलने की सबसे अधिक संभावना जताई जा रही है। चंद्रयान-४ में कुल पांच मॉड्यूल होंगे, जो अलग-अलग चरणों में काम करेंगे। इनमें से एक मॉड्यूल चंद्रमा पर उतरेगा, नमूने इकट्ठा करेगा, और फिर वहां से उड़ान भरकर अंतरिक्ष में मौजूद मुख्य यान से वापस जुड़ेगा। इसके बाद, एक विशेष 'री-एंट्री कैप्सूल' उन नमूनों को लेकर पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करेगा और सुरक्षित लैंडिंग करेगा।

इस मिशन की सफलता भारत के भविष्य के अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए निर्णायक साबित होगी। अंतरिक्ष में दो यानों को जोड़ना (Docking) और चंद्रमा की सतह से दोबारा उड़ान भरना (Ascending) ऐसी तकनीकें हैं, जिनका उपयोग भारत अपने आगामी 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' और मानव मिशनों में करेगा। वर्तमान में, इसरो इस मिशन के लिए सेमी-क्रायोजेनिक इंजन और उन्नत रोबोटिक आर्म्स पर काम कर रहा है, जो चंद्रमा की कठोर सतह को खोदकर नमूने ले सकें। सरकार ने इस मिशन के लिए बजट और जरूरी संशोधनों को मंजूरी दे दी है, और उम्मीद जताई जा रही है कि २०२७ के अंत तक भारत इस ऐतिहासिक मिशन को अंजाम देकर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक नया अध्याय लिख देगा।

महिला सशक्तिकरण-
देश का गौरव!
जब पढ़ेगी बेटी, तभी बढ़ेगा देश।
उन्हें पंख दें, उन्हें शिक्षित और सशक्त बनाएं।
हर महिला में शक्ति है - उसे पहचानें और सम्मान दें!

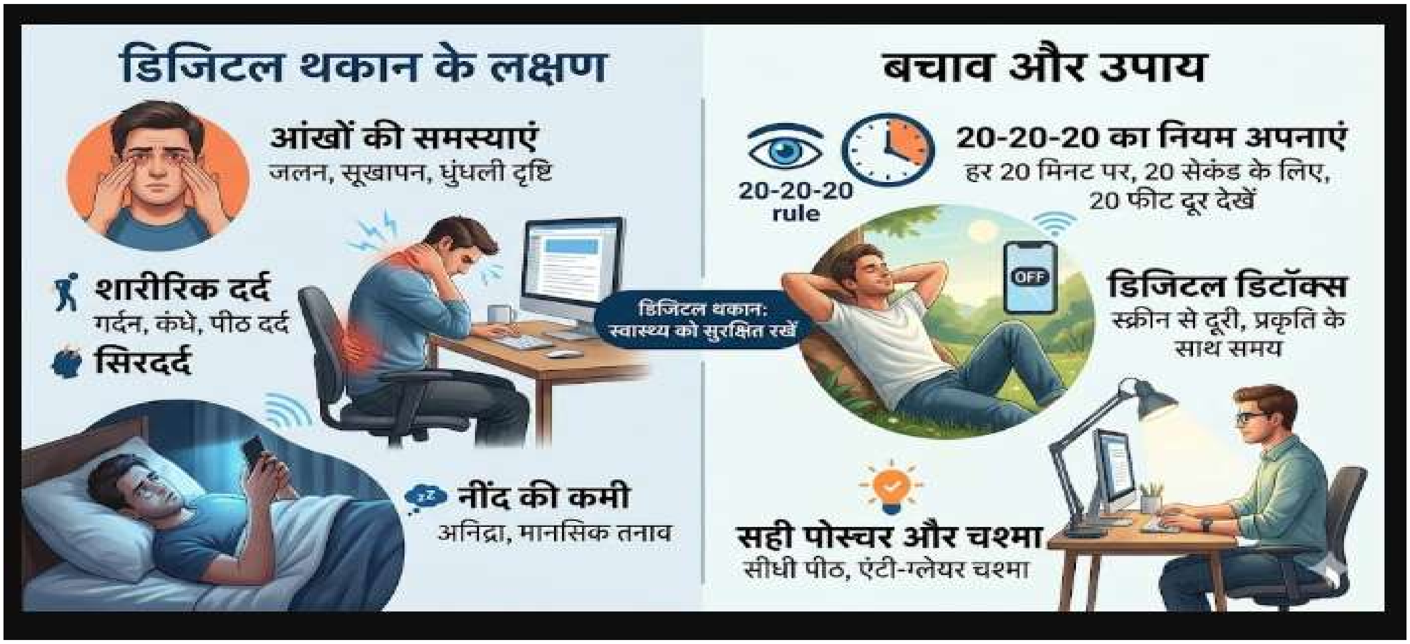

'डिजिटल थकान'

आज के दौर में स्मार्टफोन और लैपटॉप हमारी जिंदगी का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं। ऑफिस का काम हो या मनोरंजन, हम घंटों स्क्रीन के सामने बिताते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह आदत धीरे-धीरे आपके शरीर को अंदर से खोखला कर रही है? विशेषज्ञों ने इसे 'डिजिटल थकान' (Digital Fatigue) का नाम दिया है। डिजिटल थकान वह शारीरिक और मानसिक स्थिति है जो डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक और निरंतर उपयोग के कारण उत्पन्न होती है। यह न केवल आपकी आंखों को प्रभावित करती है, बल्कि आपके मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है।

डिजिटल थकान के मुख्य लक्षण

आंखों की समस्याः आंखों में जलन, सूखापन (Dry Eyes), धुंधली दृष्टि और लालिमा।

शारीरिक दर्दः गर्दन, कंधों और पीठ में लगातार दर्द रहना (जिसे अक्सर 'टेक्स्ट नेक' भी कहा जाता है)।

नींद की कमीः रात को देर तक स्क्रीन देखने के कारण अनिद्रा (Insomnia) की समस्या।

मानसिक तनावः चिड़चिड़ापन, एकाग्रता में कमी और मानसिक थकावट महसूस करना।

सिरदर्दः स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी (Blue Light) के कारण बार-बार सिरदर्द होना।

बचाव के प्रभावी उपाय

तकनीक हमारी सुविधा के लिए है, न कि स्वास्थ्य बिगाड़ने के लिए। डिजिटल थकान के शुरुआती लक्षणों को पहचानना और समय रहते सावधानी बरतना आपके शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है। याद रखें आपकी सेहत आपकी सबसे बड़ी पूंजी है, स्क्रीन की दुनिया से बाहर भी एक खूबसूरत जिंदगी है!

२०-२०-२० का नियम अपनाएं

हर २० मिनट के स्क्रीन समय के बाद, कम से कम २० सेकंड के लिए २० फीट दूर रखी किसी वस्तु को देखें। इससे आंखों की मांसपेशियों को आराम मिलता है।

डिजिटल डिटॉक्स

दिन भर में कम से कम १ से २ घंटे का समय ऐसा तय करें जिसमें आप किसी भी गैजेट का उपयोग नहीं करेंगे। सोने से कम से कम एक घंटा पहले फोन को खुद से दूर रख दें।

बैठने का सही तरीका

लैपटॉप या मोबाइल का उपयोग करते समय अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखें। स्क्रीन आपकी आंखों के लेवल पर होनी चाहिए ताकि गर्दन पर दबाव न पड़े।

पलकें झपकाएं

स्क्रीन देखते समय हम अक्सर पलकें झपकाना भूल जाते हैं। याद से बार-बार पलकें झपकाएं ताकि आंखों में नमी बनी रहे।

एंटी-ग्लेयर चश्मे का उपयोग

अगर आपका काम घंटों कंप्यूटर पर बैठने का है, तो ब्लू-कट या एंटी-ग्लेयर चश्मों का उपयोग करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

१. मेष (Aries)ः मई का महीना मेष राशि वालों के लिए ऊर्जा और पराक्रम से भरा रहेगा। ११ मई को मंगल का आपकी ही राशि में गोचर 'रूचक राजयोग' बनाएगा, जिससे कार्यक्षेत्र में आपका दबदबा बढ़ेगा और रुकी हुई पदोन्नति मिलने के प्रबल योग बनेंगे। जो जातक नई नौकरी की तलाश में हैं, उन्हें महीने के दूसरे सप्ताह में सफलता मिल सकती है। आर्थिक दृष्टि से आय के नए स्रोत खुलेंगे, लेकिन जोश में आकर बड़े निवेश करने से बचें। स्वास्थ्य के मामले में आपको थोड़ा सावधान रहना होगा, क्योंकि अत्यधिक कार्यभार के कारण मानसिक तनाव और सिरदर्द की समस्या हो सकती है। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा और जीवनसाथी का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय एकाग्रता बढ़ाने वाला है।

२. वृषभ (Taurus)ः वृषभ राशि के जातकों के लिए यह माह मिला-जुला प्रभाव लेकर आएगा। करियर के मोर्चे पर आपको अपनी मेहनत का उचित फल प्राप्त होगा और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। यदि आप व्यापार करते हैं, तो विदेश से कोई बड़ा ऑर्डर या विदेशी कंपनियों के साथ साझेदारी की संभावना बन रही है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, हालांकि सुख-सुविधाओं और विलासिता की वस्तुओं पर अत्यधिक खर्च आपके बजट को प्रभावित कर सकता है। सेहत की बात करें तो गले और आंखों से संबंधित छोटी-मोटी परेशानियां हो सकती हैं, इसलिए ठंडी चीजों के सेवन से बचें। घर में किसी मांगलिक कार्य की रूपरेखा बन सकती है, जिससे वातावरण सकारात्मक रहेगा।

३. मिथुन (Gemini)ः मिथुन राशि के लिए मई का महीना उपलब्धियों भरा साबित होगा। आपकी राशि में शुक्र और गुरु की युति होने से समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा और रचनात्मक कार्यों में आपकी रुचि जागेगी। नौकरीपेशा लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने के शानदार अवसर मिलेंगे, जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन के पुराने अटके हुए मामले सुलझेंगे और पैतृक संपत्ति से लाभ होने के संकेत हैं। स्वास्थ्य के लिहाज से यह समय काफी बेहतर रहेगा और आप पुरानी बीमारियों से निजात पाएंगे। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी और अविवाहितों के लिए विवाह के प्रस्ताव आ सकते हैं। व्यावसायिक यात्राएं इस महीने बहुत फलदायी साबित होंगी।

४. कर्क (Cancer): कर्क राशि वालों के लिए कार्यक्षेत्र में यह महीना थोड़ी व्यस्तता और चुनौतियों वाला हो सकता है। ऑफिस में काम का बोझ बढ़ने से आपको अधिक समय देना पड़ सकता है, लेकिन आपकी मेहनत व्यर्थ नहीं जाएगी। व्यापार में नई योजनाओं को लागू करने के लिए यह समय अच्छा है, विशेषकर साझेदारी के कामों में पारदर्शिता बनाए रखें। आर्थिक मोर्चे पर निवेश के लिए महीने का मध्य भाग उत्तम रहेगा, वाहन या भूमि खरीदने के योग बन रहे हैं। सेहत को लेकर थोड़ी सावधानी बरतें, विशेषकर खान-पान में लापरवाही से पेट खराब हो सकता है। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें और उनके साथ समय बिताएं। धार्मिक कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा।

५. सिंह (Leo)ः सिंह राशि के जातकों के लिए मई का महीना भाग्य में वृद्धि लेकर आएगा। आपके रुके हुए सरकारी काम इस महीने पूरे हो सकते हैं और राजनीति से जुड़े लोगों को कोई बड़ा पद मिल सकता है। नौकरी में स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं, जो आपके भविष्य के लिए सुखद रहेगा। आर्थिक स्थिति काफी मजबूत रहेगी और अचानक किसी पुराने निवेश से बड़ा मुनाफा मिल सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, जोड़ों में दर्द या हड्डियों से जुड़ी समस्या परेशान कर सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ किसी लंबी दूरी की यात्रा की योजना बन सकती है। संतान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलने से घर में खुशी का माहौल रहेगा।

६. कन्या (Virgo)ः कन्या राशि के जातकों के लिए यह महीना बौद्धिक कार्यों और अनुसंधान के लिए बेहतरीन है। कार्यक्षेत्र में आपकी तर्कशक्ति और

कार्यकुशलता की प्रशंसा होगी, जिससे आपके सहकर्मी भी आपसे प्रभावित रहेंगे। व्यापार में नए तकनीकी प्रयोग करने से लाभ की मात्रा बढ़ेगी, हालांकि गुप्त शत्रुओं से सावधान रहने की जरूरत है। आर्थिक रूप से यह माह सामान्य रहेगा, इसलिए बचत पर अधिक ध्यान देना जरूरी है। सेहत के मामले में त्वचा संबंधी एलर्जी या संक्रमण की आशंका है, इसलिए बाहर के खाने से परहेज करें। छोटे भाई-बहनों के साथ किसी बात को लेकर अनबन हो सकती है, बेहतर होगा कि बातचीत से मामले को सुलझाएं।

७. तुला (Libra): तुला राशि वालों के लिए मई का महीना व्यापारिक और व्यक्तिगत संबंधों में संतुलन बनाने वाला रहेगा। यदि आप नया व्यवसाय शुरू करने की सोच रहे हैं, तो १५ मई के बाद का समय काफी अनुकूल है। कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का पूरा सहयोग मिलेगा, जिससे प्रोजेक्ट्स समय पर पूरे होंगे। आर्थिक स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होगा और आय के एक से अधिक साधन विकसित होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से जीवनसाथी की सेहत चिंता का कारण बन सकती है, उनका विशेष ख्याल रखें। सामाजिक जीवन में आपकी सक्रियता बढ़ेगी और आप किसी सामाजिक संस्था से जुड़ सकते हैं। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर परिणाम मिलने की संभावना है।

८. वृश्चिक (Scorpio): वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह माह चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने वाला रहेगा। मंगल की स्थिति आपको काफी साहसी बनाएगी, जिससे आप कार्यस्थल पर अपने विरोधियों को मात देने में सफल रहेंगे। कानूनी विवादों या कोर्ट-कचहरी के मामलों में फैसला आपके पक्ष में आने की संभावना है। आर्थिक रूप से आपको पुराने कर्ज चुकाने में आसानी होगी और आय में निरंतरता बनी रहेगी। स्वास्थ्य के लिहाज से आप खुद को ऊर्जावान महसूस करेंगे, लेकिन वाहन चलाते समय सावधानी बरतना आवश्यक है। पारिवारिक जीवन में शांति बनी रहेगी, हालांकि किसी रिश्तेदार के हस्तक्षेप से छोटी-मोटी बहस हो सकती है। धैर्य और संयम से काम लें।

९. धनु (Sagittarius): धनु राशि वालों के लिए यह महीना ज्ञान और अध्यात्म की ओर झुकाव वाला रहेगा। जो लोग शिक्षा, परामर्श या लेखन के क्षेत्र से जुड़े हैं, उनके लिए यह समय स्वर्णिम साबित हो सकता है। कार्यक्षेत्र में आपकी सलाह को गंभीरता से लिया जाएगा और आपको नई जिम्मेदारियां सौंपी जा सकती हैं। आर्थिक मामलों में जोखिम भरे निवेश जैसे शेयर बाजार या सट्टेबाजी से पूरी तरह दूर रहें, वरना नुकसान हो सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, खान-पान की गलत आदतों से लिवर या मोटापे की समस्या बढ़ सकती है। संतान की शिक्षा या करियर को लेकर कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ सकता है। घर में किसी धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन संभव है।

१०. मकर (Capricorn): मकर राशि के जातकों के लिए यह माह संपत्ति और पारिवारिक सुख में वृद्धि करने वाला है। यदि आप घर या फ्लैट खरीदने का मन बना रहे हैं, तो इस महीने आपकी इच्छा पूरी हो सकती है। कार्यक्षेत्र में आप बहुत ही अनुशासित होकर काम करेंगे, जिससे आपके बॉस आपसे बेहद खुश रहेंगे। व्यापार में विस्तार के लिए कुछ नई मशीनरी या तकनीक पर खर्च हो सकता है, जो भविष्य में लाभ देगा। स्वास्थ्य के मामले में हृदय रोगियों और रक्तचाप के मरीजों को इस महीने अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है। परिवार में सुख-शांति का माहौल रहेगा और माता के साथ आपके संबंध और भी गहरे होंगे। पुराने दोस्तों से मुलाकात मन को प्रसन्न करेगी।

११. कुंभ (Aquarius): कुंभ राशि वालों के लिए मई का महीना मेहनत और यात्राओं वाला रहेगा। आपको करियर के सिलसिले में कई छोटी-छोटी यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, जो शुरुआत में थकाऊ लगेंगी लेकिन अंततः लाभकारी सिद्ध होंगी। संचार और मार्केटिंग से जुड़े लोगों के लिए यह महीना टारगेट पूरे करने वाला साबित होगा। आर्थिक स्थिति सामान्य बनी रहेगी, हालांकि भाई-बहनों की मदद के लिए आपको कुछ धन खर्च करना पड़ सकता है। सेहत की बात करें तो कंधे या हाथ में खिंचाव या चोट लगने की आशंका है, इसलिए भारी व्यायाम करते समय सावधानी बरतें। पड़ोसियों के साथ संबंधों में सुधार आएगा और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

१२. मीन (Pisces): मीन राशि के जातकों के लिए यह माह अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने का है। कार्यक्षेत्र में किसी गलतफहमी के कारण विवाद हो सकता है, इसलिए अपनी बात बहुत ही स्पष्टता और विनम्रता से रखें। व्यापार में धन के लेनदेन को लेकर लिखित दस्तावेज जरूर रखें ताकि बाद में कोई परेशानी न हो। आर्थिक दृष्टि से खर्चों की अधिकता रहेगी, लेकिन अचानक कहीं से मिला हुआ धन आपको राहत प्रदान करेगा। स्वास्थ्य के मामले में दांतों या आंखों की समस्या परेशान कर सकती है, नियमित चेकअप कराते रहें। घर के बुजुर्गों का आशीर्वाद आपके लिए ढाल का काम करेगा। कुल मिलाकर यह संयम के साथ आगे बढ़ने वाला महीना है।

अमेज़न के घने जंगलों में २५०० साल पुराना लुप्त शहर!

इक्वाडोर के अमेज़न वर्षावनों (Amazon Rainforest) में मिली यह खोज पुरातत्व विज्ञान की दुनिया में एक बहुत बड़ी घटना मानी जा रही है। शोधकर्ताओं ने लेजर तकनीक (LiDAR) का उपयोग करके बादलों और घने जंगलों के नीचे छिपे एक विशाल प्राचीन शहर का पता लगाया है।

१. कहाँ और कब की है यह खोज?

यह प्राचीन शहर इक्वाडोर की उपानो घाटी (Upano Valley) में मिला है। हालांकि इस क्षेत्र में बस्तियों के संकेत दशकों पहले मिले थे, लेकिन हाल ही में हुए 'लिडार' सर्वे ने इसकी विशालता और जटिलता को पूरी तरह स्पष्ट किया है।

२. यह कितना पुराना है?

माना जा रहा है कि यह शहर लगभग २,५०० साल पुराना है। वैज्ञानिकों के अनुसार, यहाँ लोग करीब ५०० ईसा पूर्व (BC) से लेकर ३०० से ६०० ईस्वी (AD) तक रहते थे। यह इसे अमेज़न में अब तक खोजी गई सबसे पुरानी और सबसे बड़ी शहरी सभ्यता बनाता है।

३. शहर की बनावट (Structure)

३५० हेक्टेयर से भी अधिक क्षेत्र में फैले इस शहर की बनावट हैरान करने वाली हैः

प्लेटफ़ॉर्म और टीलेः यहाँ मिट्टी के ऊंचे प्लेटफॉर्म बनाए गए थे, जिन पर घर और मंदिर स्थित थे। सड़कों का जालः शहर की सबसे खास बात इसकी सीधी और चौड़ी सड़कें हैं, जो अलग-अलग बस्तियों को आपस में जोड़ती थीं। यह दर्शाता है कि उस समय के लोग इंजीनियरिंग में बहुत उन्नत थे।

नहरें और ड्रेनेजः खेती के लिए पानी के प्रबंधन और जल निकासी के लिए नहरों का इस्तेमाल किया गया था।

४. यहाँ कौन रहता था?

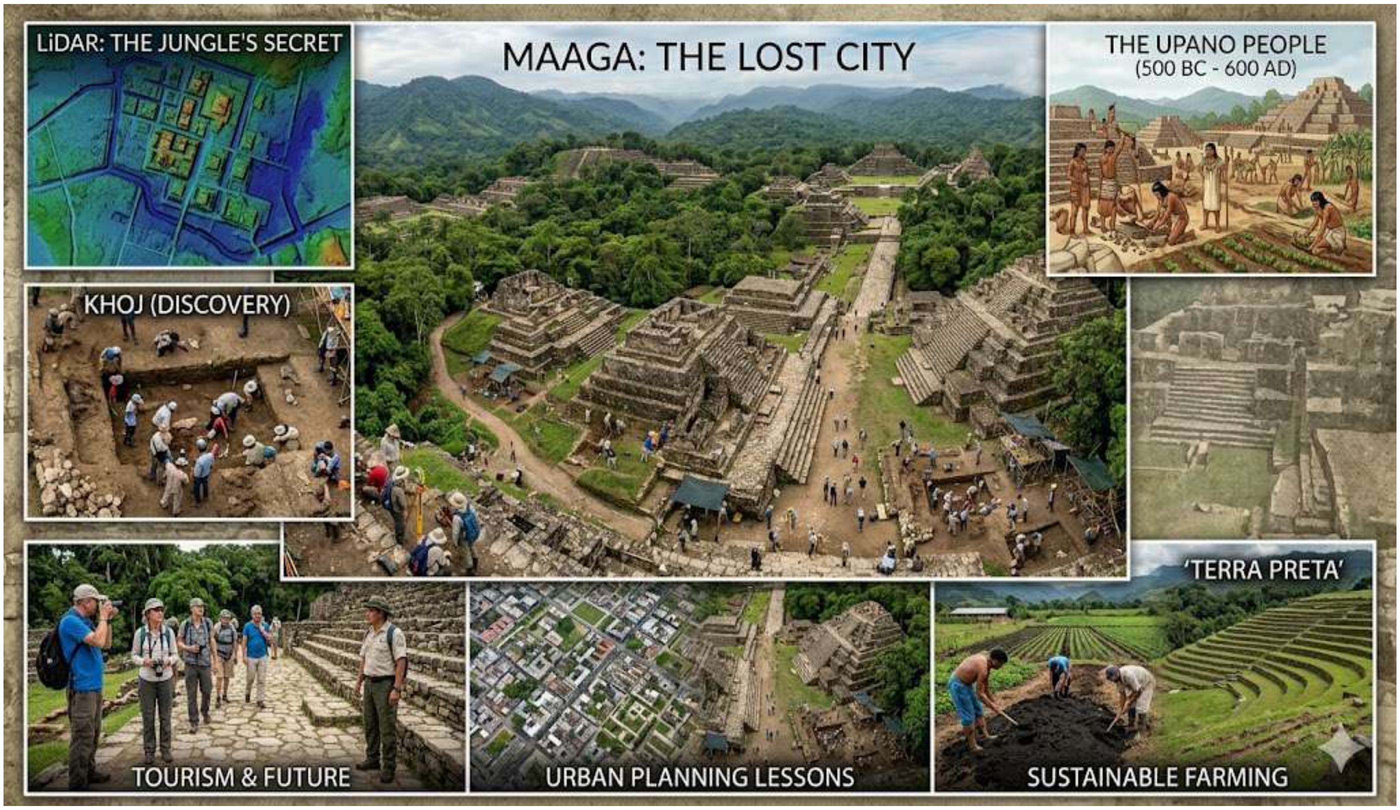

यह प्राचीन शहर दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के इक्वाडोर (Ecuador) देश में स्थित है। विशेष रूप से, यह इक्वाडोर के पूर्वी हिस्से में स्थित उपानो घाटी (Upano Valley) के घने अमेज़न वर्षावनों (Amazon Rainforest) के नीचे पाया गया है। यह इलाका एंडीज पर्वतमाला की तलहटी में आता है। वैज्ञानिकों ने 'लिडार' (LiDAR) तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें हवाई जहाज से लेजर किरणें जमीन पर भेजी जाती हैं। इन किरणों ने घने पेड़ों और झाड़ियों के पार जाकर जमीन का एक नक्शा तैयार किया, जिससे पता चला कि आज जहाँ सिर्फ जंगल दिखता है, वहां सदियों पहले एक बहुत बड़ा और विकसित शहर बसा हुआ था।

यह शहर किलामपे (Kilamope) और बाद में उपानो (Upano) संस्कृति के लोगों का निवास स्थान था। पहले माना जाता था कि अमेज़न के प्राचीन लोग केवल छोटे समूहों में खानाबदोशों की तरह रहते थे, लेकिन इस खोज ने साबित कर दिया कि यहाँ एक व्यवस्थित 'शहरी सभ्यता' मौजूद थी।

५. यह खोज क्यों महत्वपूर्ण है?

इतिहास का बदलावः इसने इस धारणा को गलत साबित कर दिया कि अमेज़न में कभी बड़ी सभ्यताएं नहीं रहीं। आबादीः अनुमान है कि इस क्षेत्र में हज़ारों की संख्या में लोग रहते थे, जो उस समय के हिसाब से काफी बड़ी आबादी थी।

तकनीकः यह दिखाता है कि प्राचीन सभ्यताओं के पास भी जटिल सामाजिक और बुनियादी ढांचा (Infrastructure) तैयार करने की क्षमता थी। संक्षेप में कहें तो, यह 'मागा' या उपानो घाटी की खोज अमेज़न के इतिहास को फिर से लिख रही है, जिसे अब तक केवल एक 'कुंवारा जंगल' समझा जाता था। इस प्राचीन शहर की खोज का उपयोग केवल इतिहास जानने तक सीमित नहीं है; इसके कई व्यावहारिक और वैज्ञानिक लाभ हैंः

पर्यटन और अर्थव्यवस्था (Tourism)

अगर सरकार इस जगह को सुरक्षित करती है, तो यह माचू पिचू (Peru) की तरह एक बड़ा वैश्विक पर्यटन स्थल बन सकता है। इससे इक्वाडोर की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर खुलेंगे।

प्राचीन शहरी नियोजन (Ancient URan Planning)

आज के आधुनिक इंजीनियर और आर्किटेक्ट्स इस शहर की बनावट का अध्ययन कर रहे हैं। यह शहर जिस तरह से नहरों (Canals), जल निकासी (Drainage) और सीधी सड़कों के नेटवर्क से जुड़ा था, वह हमें सिखा सकता है कि घने जंगलों या अधिक

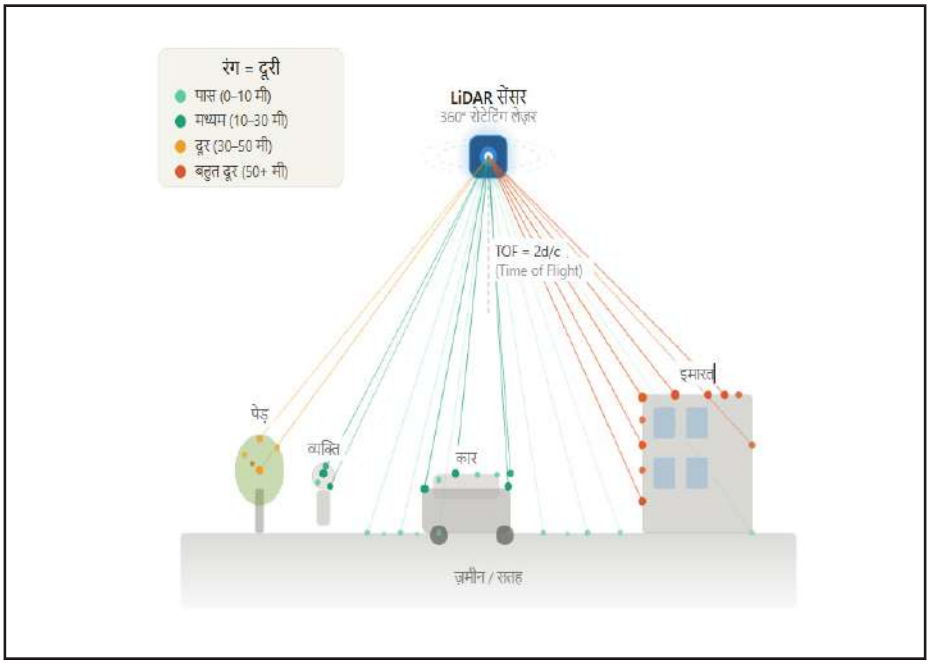

यह LiDAR (Light Detection and Ranging) स्कैन का एक चित्रण है।

कैसे काम करता है: सेंसर ऊपर से ३६०ष्ट घुमते हुए लेज़र पल्स भेजता है। हर किरण किसी वस्तु से टकराकर वापस आती है – इस समय (Time of Flight) से दूरी नापी जाती है: TOF = 2d/c

रंग कोडिंग (दूरी के अनुसार):

हरा/फ़िरोज़ा → पास की वस्तुएं (ज़मीन, कार)
पीला/नारंगी → दूर की वस्तुएं (पेड़)
लाल/कोरल → बहुत दूर (इमारत)

हर किरण के अंत में बने बिंदु मिलकर Point Cloud बनाते हैं – यही ३D मैप होता है जिसे self-driving cars, robots, और surveying में इस्तेमाल किया जाता है।

नीचे एक घने अमेज़न के जंगल का ड्रोन-व्यू दृश्य है:

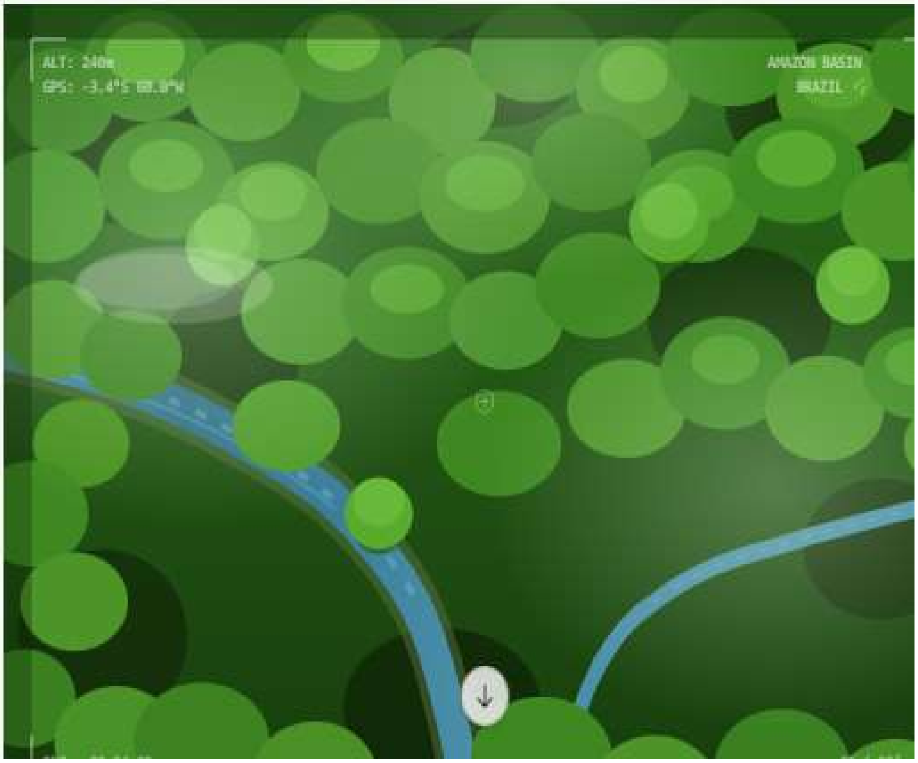

वर्षा वाले क्षेत्रों में स्थायी बुनियादी ढांचा (Infrastructure) कैसे बनाया जाए।

कृषि तकनीक

(Sustainable Farming)

वैज्ञानिकों को यहाँ 'टेरा प्रेटा' (Terra Preta) जैसी उपजाऊ मिट्टी और खेती के उन्नत तरीके मिले हैं। अमेज़न के प्राचीन लोग बिना जंगल को नष्ट किए हज़ारों लोगों का पेट कैसे भरते थे, यह जानकारी आज की सस्टेनेबल खेती के लिए बहुत काम आ सकती है।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण (Climate Insights)

इस शहर के अवशेषों का अध्ययन करने से यह पता चल सकता है कि पिछले २,५०० वर्षों में अमेज़न के पर्यावरण में क्या बदलाव आए। यह समझने में मदद मिलेगी कि प्राचीन सभ्यताओं ने प्राकृतिक आपदाओं या जलवायु परिवर्तन का सामना कैसे किया था।

सांस्कृतिक गौरव और पहचान

यह खोज अमेज़न के आदिवासी समुदायों और लैटिन अमेरिका के लोगों के लिए गर्व का विषय है। इससे दुनिया का यह नजरिया बदल गया है कि अमेज़न हमेशा से केवल एक जंगली इलाका था; अब इसे एक प्राचीन सभ्यता के केंद्र के रूप में देखा जा रहा है।

भविष्य की खोजों के लिए ब्लूप्रिंट

इस शहर ने यह साबित कर दिया है कि LiDAR जैसी तकनीक क्या कर सकती है। अब इसका उपयोग दुनिया के अन्य हिस्सों (जैसे भारत के घने जंगलों या समुद्र के नीचे) में दबे हुए इतिहास को खोजने के लिए एक मॉडल के रूप में किया जा रहा है।

'दादी की शादी' से धमाल!

कपूर खानदान की अगली पीढ़ी अब बड़े पर्दे पर अपनी चमक बिखेरने के लिए तैयार है। रिद्धिमा आगामी फिल्म 'दादी की शादी' के जरिए अभिनय की दुनिया में कदम रखेंगी, जिसका ट्रेलर हाल ही में रिलीज हुआ है और इसे दर्शकों की जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। इस फिल्म की सबसे बड़ी खासियत यह है कि रिद्धिमा अपनी असल जिंदगी की माँ नीतू कपूर के साथ स्क्रीन साझा करती नजर आएंगी, जो फैंस के लिए किसी सरप्राइज से कम नहीं है। अब तक एक सफल ज्वैलरी डिजाइनर और फैशन इन्फ्लुएंसर के रूप में अपनी पहचान बनाने वाली रिद्धिमा ने हमेशा खुद को चकाचौंध से दूर रखा था, लेकिन इस पारिवारिक कॉमेडी फिल्म की पटकथा ने उन्हें अभिनय के लिए राजी कर लिया। फिल्म में मशहूर कॉमेडियन कपिल शर्मा भी मुख्य भूमिका में हैं, जो कहानी में मनोरंजन का तड़का लगाएंगे। रणबीर कपूर और आलिया भट्ट ने भी सोशल मीडिया पर रिद्धिमा की इस नई पारी की सराहना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं।

सलमान और नयनतारा का ईद पर बड़ा धमाका!

बॉलीवुड के सुल्तान सलमान खान ने एक बार फिर अपने प्रशंसकों को एक बड़ी ईदी दे दी है। ताजा खबरों के अनुसार, सलमान खान ने साउथ की लेडी सुपरस्टार नयनतारा के साथ अपनी अगली मेगा-बजट फिल्म के लिए हाथ मिलाया है। इस फ्रेश जोड़ी की घोषणा ने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया है, क्योंकि यह पहली बार होगा जब ये दोनों दिग्गज कलाकार एक साथ बड़े पर्दे पर नजर आएंगे। सलमान खान ने मजाकिया अंदाज में इस फिल्म की रिलीज डेट ईद २०२७ बताई है, जिससे यह साफ है कि आने वाले सालों में बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड्स की सुनामी आने वाली है। नयनतारा, जिन्होंने 'जवान' के जरिए बॉलीवुड में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है, अब सलमान के साथ एक्शन और रोमांस का नया तड़का लगाती दिखेंगी। फिल्म जगत के विशेषज्ञों का मानना है कि यह फिल्म न केवल हिंदी भाषी क्षेत्रों में बल्कि साउथ मार्केट में भी ऐतिहासिक कमाई करेगी। निर्देशक और फिल्म के टाइटल को लेकर अभी रहस्य बना हुआ है, लेकिन सलमान-नयनतारा के साथ आने की खबर ने ही दर्शकों की बेताबी चरम पर पहुँचा दी है। यह प्रोजेक्ट २०२७ के सबसे बड़े सिनेमाई इवेंट्स में से एक होने वाला है, जिसके लिए शूटिंग की तैयारियां जल्द ही शुरू होने की उम्मीद है।

२०२६ विधानसभा चुनावः एक ऐतिहासिक जनादेश का विस्तृत विश्लेषण

पश्चिम बंगालः 'परिवर्तन' की दूसरी लहर

पश्चिम बंगाल के नतीजे सबसे अधिक चौंकाने वाले और ऐतिहासिक रहे हैं। पिछले एक दशक से अधिक समय तक सत्ता में रहने वाली ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस (TMC) को इस बार कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा।

सत्ता परिवर्तनः भारतीय जनता पार्टी ने 'सोनार बांग्ला' के अपने विजन और मजबूत जमीनी संगठन के दम पर बहुमत के आंकड़े (१४८) को पार करते हुए १९० से अधिक सीटों पर बढ़त बनाई है। यह बंगाल की राजनीति में वामपंथ के पतन के बाद दूसरा सबसे बड़ा सत्ता परिवर्तन है। मुख्य मुद्देः भ्रष्टाचार के आरोप, संदेशखाली जैसी घटनाएं और रोजगार के मुद्दे इस चुनाव में हावी रहे। भाजपा की ओर से ध्रुवीकरण और विकास के मॉडल का मिश्रण काम कर गया। TMC की स्थितिः ममता बनर्जी ने अपनी पारंपरिक सीटों पर पकड़ बनाने की कोशिश की, लेकिन ग्रामीण बंगाल में सत्ता विरोधी लहर (Antied-incumebncyed) भारी पड़ी।

तमिलनाडुः सिनेमा से सत्ता का नया सफर (TVK) का उदय)

तमिलनाडु की राजनीति हमेशा से दो ध्रुवों (DMK और AIADMK) के बीच रही है, लेकिन २०२६ ने इस परंपरा को तोड़ दिया है।

थलपति विजय का जादूः सुपरस्टार विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कड़गम (TVK) ने अपने पहले ही चुनाव में किंगमेकर की भूमिका से ऊपर उठकर सबसे बड़ी पार्टी बनने की ओर कदम बढ़ाए हैं। युवाओं और पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं ने विजय के 'ईमानदार राजनीति' के वादे पर भरोसा जताया है।

DMK को झटकाः मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के नेतृत्व वाले गठबंधन को सत्ता विरोधी लहर और परिवारवाद के आरोपों का सामना करना पड़ा। हालांकि DMKed अभी भी रेस में है, लेकिन उसकी सीटों में भारी गिरावट आई है।

AIADMK का संघर्षः पार्टी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करती दिखी, क्योंकि उसका एक बड़ा वोट बैंक TVK की ओर खिसक गया।

असमः विकास और हिंदुत्व की हैट्रिक

उत्तर-पूर्व के प्रवेश द्वार असम में भाजपा ने अपनी पकड़ को और भी मजबूत कर लिया है।

हिमंत बिस्वा सरमा का नेतृत्वः मुख्यमंत्री सरमा के आक्रामक प्रचार और विकास कार्यों ने भाजपा गठबंधन (NDA) को लगातार तीसरी बार सत्ता के करीब पहुंचा दिया है।

विपक्ष की स्थितिः कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने ऊपरी असम में कुछ बढ़त हासिल की, लेकिन बराक वैली और निचले असम में भाजपा के गढ़ को भेदने में नाकाम रहे। NRC और सीमा पार घुसपैठ जैसे मुद्दे एक बार फिर भाजपा के पक्ष में रहे।

केरलः सत्ता परिवर्तन का पारंपरिक रिवाज

केरल ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह हर पांच साल में सरकार बदलने की अपनी परंपरा पर कायम है।

UDF की वापसीः पिछले चुनाव में LDF (वामपंथी गठबंधन) ने लगातार दूसरी बार जीत कर इतिहास रचा था, लेकिन २०२६ में जनता

ने फिर से कांग्रेस समर्थित UDF को मौका दिया है। पिनाराई विजयन की सरकार पर लगे सोने की तस्करी के पुराने आरोप और आर्थिक प्रबंधन के मुद्दों ने विपक्षी गठबंधन को बढ़त दिलाई।

BJP का बढ़ता आधारः केरल में बीजेपी ने इस बार न केवल अपना वोट शेयर बढ़ाया है, बल्कि त्रिशूर और तिरुवनंतपुरम जैसे क्षेत्रों में कुछ महत्वपूर्ण सीटें जीतकर विधानसभा में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है।

पुडुचेरीः स्थिरता के पक्ष में जनादेश

केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में मतदाताओं ने स्थिरता को प्राथमिकता दी है। NDA का दबदबाः एआईएनआरसी (AINRC) और भाजपा के गठबंधन ने स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया है। केंद्र सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ और उपराज्यपाल व मुख्यमंत्री के बीच बेहतर समन्वय ने मतदाताओं को प्रभावित किया। इन नतीजों का असर आने वाले समय में देश की राजनीति पर गहरा पड़ेगाः

दक्षिण भारत की नई राजनीतिः तमिलनाडु में एक फिल्मी सितारे की पार्टी की सफलता ने केरल और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में भी नए क्षेत्रीय समीकरणों की संभावना जगा दी है। पूर्वोत्तर में भाजपा का वर्चस्वः असम की जीत ने यह साफ कर दिया है कि उत्तर-पूर्व अब भाजपा का एक मजबूत अभेद्य किला बन चुका है। विपक्ष के लिए आत्ममंथनः बंगाल और केरल के नतीजों ने कांग्रेस और क्षेत्रीय क्षत्रपों को अपनी रणनीति पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। विशेष रूप से बंगाल में टीएमसी की हार विपक्षी एकता के लिए एक बड़ा झटका है।

४ मई २०२६ के ये चुनाव परिणाम यह दर्शाते हैं कि भारतीय मतदाता अब 'बदलाव' और 'प्रदर्शन' (Performance) को सबसे ऊपर रख रहा है। जहां एक तरफ भाजपा अपनी अखिल भारतीय उपस्थिति दर्ज करा रही है, वहीं दक्षिण भारत में क्षेत्रीय अस्मिता और नए चेहरों का उदय भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता को दर्शाता है।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव २०२६ के नतीजों में हो रहा यह सत्ता परिवर्तन भारतीय राजनीति की सबसे बड़ी खबरों में से एक है। ४ मई २०२६ को आ रहे रुझानों के अनुसार, १५ साल से सत्ता में काबिज ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस (TMC) को बड़ा झटका लगा है। यहाँ इस बदलाव के मुख्य कारणों और आंकड़ों का विस्तृत विश्लेषण दिया गया हैः

१. आंकड़ों का खेल (सीटों का गणित)

बहुमत का आंकड़ाः पश्चिम बंगाल में कुल २९४ सीटें हैं, जहाँ सरकार बनाने के लिए १४८ सीटों की आवश्यकता होती है।

BJP का प्रदर्शनः ताजा आंकड़ों के अनुसार, भारतीय जनता पार्टी १९०+ सीटों पर बढ़त बनाए हुए है, जो पिछले चुनावों के मुकाबले एक बहुत बड़ी छलांग है।

TMC की स्थितिः टीएमसी ८०-९० सीटों के बीच सिमटती दिख रही है, जो २०११ के बाद उनका सबसे खराब प्रदर्शन माना जा रहा है।

२. सत्ता परिवर्तन के बड़े कारण

एंटी-इंकम्बेंसी (सत्ता विरोधी लहर)ः लगातार १५ साल सत्ता में रहने के कारण स्थानीय स्तर पर विधायकों और नेताओं के खिलाफ जनता में नाराजगी देखी गई।

भ्रष्टाचार के आरोपः शिक्षक भर्ती घोटाले से लेकर राशन घोटाले तक, भ्रष्टाचार के विभिन्न मुद्दों ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के मतदाताओं को प्रभावित किया।

कानून व्यवस्था और संदेशखाली कांडः संदेशखाली जैसी घटनाओं ने महिला सुरक्षा के

मुद्दे को केंद्र में ला दिया, जिससे टीएमसी का मजबूत महिला वोट बैंक (महिला मतदाता) काफी हद तक प्रभावित हुआ।

संगठनात्मक मजबूतीः बीजेपी ने पिछले ५ सालों में बंगाल के बूथ स्तर पर अपना संगठन काफी मजबूत किया और केंद्र सरकार की योजनाओं (जैसे पीएम-किसान, उज्ज्वला) का लाभ सीधे लोगों तक पहुंचाने का दावा किया।

३. प्रमुख नेताओं का प्रदर्शन

ममता बनर्जीः मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपनी पारंपरिक सीट पर कड़े मुकाबले में फंसी हुई हैं, जो उनकी लोकप्रियता में गिरावट का संकेत है।

शुभेंदु अधिकारी व अन्य नेताः बीजेपी के स्थानीय नेतृत्व ने जंगलमहल और उत्तर बंगाल के क्षेत्रों में जबरदस्त बढ़त हासिल की है।

४. बंगाल की राजनीति पर प्रभाव

यह जीत न केवल बंगाल में भाजपा की पहली सरकार बनाएगी, बल्कि यह संदेश भी देगी कि बंगाल में 'वामपंथ' और 'टीएमसी' के बाद अब एक नए राजनीतिक युग की शुरुआत हो चुकी है। यह जीत आने वाले समय में राष्ट्रीय राजनीति में भी भाजपा की पकड़ को और मजबूत करेगी।

ओडिशा के भुवनेश्वर में आयोजित ६१वें फेमिना मिस इंडिया ग्रैंड फिनाले में गोवा की साध्वी सैल ने जीत का परचम लहराया। इस ऐतिहासिक शाम में महाराष्ट्र की राज नंदिनी पवार और यूनियन टेरिटरीज की श्री अद्वैता जी क्रमशः पहली और दूसरी रनर-अप रहीं। सितारों से सजी इस शाम में ग्लैमर और संस्कृति का अनूठा संगम देखने को मिला, जहाँ अब साध्वी अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हैं।

Femina Miss India World 2026 Sadhvi Satish Sail (Photo/ANI)

गोवा की साध्वी सैल बनीं फेमिना मिस इंडिया २०२६

गोवा की साध्वी सैल को फेमिना मिस इंडिया २०२६ का खिताब मिला। महाराष्ट्र की राज नंदिनी पवार पहली रनर-अप रहीं जबकि यूनियन टेरिटरीज की श्री अद्वैता जी दूसरी रनर-अप बनीं। यह भव्य ग्रैंड फिनाले कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में शनिवार रात आयोजित हुआ। इस जीत के साथ साध्वी सैल अब प्रतिष्ठित मिस इंडिया प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। कार्यक्रम में पिछले विजेता–निकिता पोरवाल, रेखा पांडेय और आयुषी ढोलकिया ने नए विजेताओं को ताज पहनाया। इस बार का ६१वां संस्करण पहली बार ओडिशा में आयोजित हुआ जिससे भुवनेश्वर ग्लैमर, फैशन और मनोरंजन का केंद्र बन गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय की प्रतिनिधि एम. बीना, ओड़िशा सरकार के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन, मेयर सुलोचना दास, टाइम्स ग्रुप के विनीत जैन, कीट -कीस और कीम्स के प्राण-प्रतिष्ठा तथा राज्यसभा व लोकसभा के पूर्व सांसद प्रोफेसर अच्युत सामंत जी के साथ दीप प्रज्ज्वलन किया गया। शाम का संचालन मनीष पाल और सारा जाने डियास ने किया, जिन्होंने पूरे कार्यक्रम में दर्शकों को बांधे रखा।

प्रतियोगिता के पहले चरण में ३० प्रतिभागियों में से टॉप १५ चुने गए, जिसमें ओडिशा की आयुषी पांडा भी शामिल थीं। हालांकि, वह टॉप ८ में जगह बनाने से चूक गईं।

टॉप ८ प्रतिभागियों ने जूरी के सवालों का जवाब दिया। जूरी पैनल में ज़ीनत अमन, टेरेंस लेविस, अमाल मल्लिक, सेलीना जेटली, मधु भण्डारकर, नेहा धुपिया, दुती चंद और वर्तिका सिंह शामिल थे। कार्यक्रम में लारेन गोटलिब, इशान खट्टर और जुबीन नवटियाल की शानदार प्रस्तुतियों ने मनोरंजन का स्तर और शीर्ष पर बढ़ा दिया। इस सफल आयोजन से भुवनेश्वर की पहचान एक बड़े सांस्कृतिक और मनोरंजन केंद्र के रूप में और मजबूत होने की उम्मीद है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाजसेवी और KIIT एवं KISS के संस्थापक एवं राज्यसभा और लोकसभा के पूर्व सांसद अच्युत सामंत को कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ द्वारा मानद डॉक्टरेट (Honorary Doctorate) से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान विश्वविद्यालय के ७५वें दीक्षांत समारोह में प्रदान किया गया। यह उनके लिए प्राप्त ७१वीं मानद उपाधि है। यह सम्मान उन्हें शिक्षा के माध्यम से समाज के विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया। मानद उपाधि थावर चंद गहलोत, कर्नाटक के राज्यपाल द्वारा प्रदान की गई। इस अवसर पर कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री एम. सी. सुधाकर, पद्म पुरस्कार से सम्मानित एवं इसरो के पूर्व अध्यक्ष ए. एस. किरण कुमार तथा विश्वविद्यालय के कुलपति ए. एन. खान सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

लगभग ८० वर्ष पुराने कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ के अकादमिक काउंसिल और प्रबंधन बोर्ड ने इस मानद उपाधि के लिए अच्युत सामंत के नाम की सिफारिश की थी, जिसे बाद में राज्यपाल द्वारा अनुमोदित किया गया। डॉ. सामंत के आगमन पर विश्वविद्यालय अधिकारियों द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि वे पिछले तीन दशकों से शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहे हैं और यह सम्मान उन्हें आगे भी इसी दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने KIIT और KISS के सभी कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया और इस सम्मान को उनके समर्पित प्रयासों को समर्पित किया।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भारत की ६वीं सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी, THE एशिया रैंकिंग २०२६ में पूर्वी भारत में नंबर १

भुवनेश्वर, २४ अप्रैलः कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी) भुवनेश्वर ने टाईम्स हायर एजुकेशन (THE) एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग २०२६ में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत की सभी सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों में ६वां स्थान हांसिल किया है। इसके साथ ही कीट ओडिशा ही नहीं बल्कि पूरे पूर्वी भारत में शीर्ष स्थान पर उभरकर सामने आया है। वर्ष २०२५ में यह डीम्ड विश्वविद्यालय देश में ८वें स्थान पर था।

वैश्विक स्तर पर भी कीट ने उल्लेखनीय प्रगति करते हुए एशिया में १६९वां स्थान प्राप्त किया है,

जो २०२४ में १९६वें और २०२५ में १८४वें स्थान से निरंतर सुधार को दर्शाता है। THE एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग २०२६ में ३६ देशों के ९२९ विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन पांच प्रमुख मानकों के आधार पर किया गया जिनमें शिक्षण (लर्निंग एनवायरनमेंट), शोध वातावरण (वॉल्यूम, आय और प्रतिष्ठा), शोध गुणवत्ता (साइटेशन प्रभाव, उत्कृष्टता और प्रभाव), अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण (स्टाफ, छात्र और रिसर्च), तथा इंडस्ट्री आय (ज्ञान हस्तांतरण और पेटेंट) शामिल हैं। अच्युत सामंत, जो कीट और कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) के संस्थापक हैं, ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह रैंकिंग विश्वविद्यालय के संकाय, कर्मचारियों और छात्रों के निरंतर प्रयास और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीयकरण और नवाचार पर कीट का विशेष जोर इसे एक विश्वस्तरीय शैक्षणिक केंद्र के रूप में स्थापित करने में सहायक रहा है।

साझा करो, चमको':

प्रोफेसर अच्युत सामंत के 'आर्ट ऑफ गिविंग २०२६' से बक्सर के गांव में जागी सामाजिक चेतना...

सत्कर्म करते हुए नारायण की सच्ची भक्ति में अपने आप को लीन रखें! व्यावहारिक ज्ञान को जीवनोपयोगी बनाएं! दिव्य गुरु कृपापात्र बनें! सत्संग का सहारा लेकर नारायण के लौकिक और अलौकिक लीलाओं के प्रतिदिन दर्शन करें! श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का आयोजन कराएं! समस्त श्रोतागण पूरे आत्मविश्वास के साथ कथा श्रवण करें! साथ ही साथ आजीवन अपने परिवार को, अपने पड़ोसियों को, अपने मित्रों को, सहपाठियों को, समाज को, राष्ट्र को सेवा, सद्भाव, प्रेम, भाईचारा, करुणा, दया, सहानूभूति, आर्थिक सहयोग और आत्मीयता दें।

सुप्रसिद्ध कथाव्यास आचार्यश्री मारुतिनंदन जी महाराज ने अपनी कथा में देने की कला की इस वर्ष की थीम : 'साझा करो, चमको' के व्यक्तिगत और सामाजिक महत्त्व को रेखांकित करते इसे एक उपयोगी सामाजिक आंदोलन बताया और कथा आयोजक अशोक पाण्डेय की उन्मुक्त कण्ठ से सराहना की। २५ मार्च, २०२६ को जैसे ही कीट-कीस- कीम्स के प्राण-प्रतिष्ठा तथा राज्यसभा व लोकसभा के पूर्व सांसद तथा अपने वास्तविक जीवन दर्शनःआर्ट ऑफ गिविंग के जन्मदाता महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने २०२६ वर्ष के आर्ट ऑफ गिविंग की थीम उद्घोषित की वैसे ही उनके हिन्दी सलाहकार अशोक पाण्डेय ने अपने पैतृक गांवःगोप भरौली, जिलाःबक्सर, प्रदेशःबिहार में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान का सफल आयोजन कराया। यहां पर सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि १७ मई, २०१३ को जब प्रोफेसर अच्युत सामंत बैंगलुरु जा रहे थे तो यह विचार उनके मन में आया कि उनको समाज ने जो कुछ भी देकर महान् शिक्षाविद् बनाया है उसके प्रति अब कृतज्ञ होने का समय आ गया है और तत्काल उन्होंने 'आर्ट ऑफ गिविंग' को अपने वास्तविक जीवन का दर्शन बना लिया।

ऑर्ट ऑफ गिविंग अपनी २०१३ की सफल यात्रा कर अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप ले चुका है जिसे दुनिया के लगभग १२० देशों के लोग प्रतिवर्ष स्वेच्छा से प्रतिवर्ष १७ मई को अन्तर्राष्ट्रीय ऑर्ट ऑफ गिविंग दिवस मनाते हैं। अब तो ओड़िशा के साथ-साथ पूरा भारत और दुनिया भर के लोग उसे शांति, खुशी, मित्रता और सद्भाव का सबसे सशक्त सामाजिक आंदोलन मानते हैं। यह निर्विवाद रुप से सच है कि अन्तर्राष्ट्रीय ऑर्ट ऑफ गिविंग सहज, सरल और शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन है जिसकी पुष्टि सुप्रसिद्ध श्रीमद् भागवत कथा व्यास आचार्य श्री मारुतिनंदजी महाराज ने अपनी कथा-व्याख्या द्वारा स्पष्ट की। उन्होंने बताया कि जब व्यक्ति दूसरों के साथ कुछ भी साझा करता है, चाहे वह ज्ञान हो, भोजन हो, दया हो, करुणा हो,सहानुभूति हो,सेवा हो तो उससे न केवल सामने वाले को खुशी मिलती है बल्कि देने वाले को भी आंतरिक संतोष और खुशी मिलती है। 'यह खुशी देने वाले के चेहरे पर आपने आप झलकती है और उसे चमक प्रदान करती है।

मशहूर कथा व्यास आचार्य मारुति नंदन जी महाराज का उनकी कथा के माध्यम से संदेशः

सत्कर्म करते हुए नारायण की सच्ची भक्ति में अपने आप को लीन रखें! व्यावहारिक ज्ञान को जीवनोपयोगी बनाएं! दिव्य गुरु कृपापात्र बनें! सत्संग का सहारा लेकर नारायण के लौकिक और अलौकिक लीलाओं के प्रतिदिन दर्शन करें! श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का आयोजन कराएं! समस्त श्रोतागण पूरे आत्मविश्वास के साथ कथा श्रवण करें! साथ ही साथ आजीवन अपने परिवार को, अपने पड़ोसियों को, अपने मित्रों को, सहपाठियों को, समाज को, राष्ट्र को सेवा, सद्भाव, प्रेम, भाईचारा, करुणा, दया, सहानूभूति, आर्थिक सहयोग और आत्मीयता दें। सच कहा जाय तो अशोक पाण्डेय जैसे पूरी दुनिया में प्रोफेसर अच्युत सामंत के करोड़ों ऐसे अनुयायी हैं जो प्रोफेसर सामंत को अपना आदर्श मानकर प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय ऑर्ट ऑफ गिविंग दिवस १७ मई को अनेकानेक रुपों में मनाते हैं।

-अशोक पाण्डेय

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को अक्षयतृतीया माना जाता है। यह सबसे फलदायी तृतीया है। सांस्कृतिक प्रदेश ओड़िशा की सांस्कृतिक नगरी,शंखक्षेत्र पुरीधाम में प्रतिवर्ष अनुष्ठित होनेवाली अक्षयतृतीया का पौराणिक,आध्यात्मिक,सांस्कृतिक तथा सामाजिक महत्त्व अनादिकाल से है।२०२६ की अक्षयतृतीया २०अप्रैल को है।अक्षय तृतीया को युगादितृतीया भी कहते हैं।अक्षय तृतीया त्रैतायुग तथा सत्युग के शुभारंभ की संदेशवाहिका है।प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के दिन से ही भगवान बदरीनाथजी का कपाट उनके भक्तों के दर्शन के लिए खोल दिया जाता है।शांतिदूत भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर को अक्षयतृतीया महात्म्य की कथा सुनाई थी।अक्षय तृतीया के दिन ही द्वारकाधीश के बाल सखा सुदामा उनसे मिलने के लिए द्वारका गये थे।स्कन्द पुराण के वैष्णव खण्ड के वैशाख महात्म्य में यह स्पष्ट उल्लेख है कि जो वैष्णव भक्त अक्षयतृतीया के सूर्योदयकाल में प्रातः पवित्र नदी,महोदधि,पुष्करिणी स्नानकर भगवान विष्णु की विधिवत पूजा करता है और भगवान जगन्नाथ की माधुर्य लीला और ऐश्वर्य लीला की कथा सुनता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

ओड़िशा प्रदेश तथा विशेषकर पुरीधाम में प्रति वर्ष अनुष्ठित होनेवाली अक्षयतृतीया की बड़ी ही सुदीर्घ तथा गौरवशील परम्परा रही है।सबसे बड़ी बात यह है कि भारत के सांस्कृतिक प्रदेश ओड़िशा के घर-घर,गांव-गांव और शहर-शहर में अक्षयतृतीया पूरी श्रद्धा,आस्था और विश्वास से मनाई जाती है। इसीलिए अक्षयतृतीया को ओड़िया लोक आस्था और विश्वास का प्रतीक माना जाता है।

प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के पवित्र दिवस पर पुरीधाम में एकसाथ तीन शुभ कार्य आरंभ किये जाते हैं। पहलाः भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए तीनों नये रथों के निर्माण का कार्य अक्षयतृतीया के दिन से ही पुरी के गजपति महाराजा तथा भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक श्रीश्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा के राजमहल श्रीनाहर के समीप रथखला में आरंभ होता है।अक्षयतृतीया के दिन से ही भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन एवं अन्य देवों की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी के चंदन तालाब में अनुष्ठित होती है।अक्षय तृतीया के दिन से ही ओड़िशा के किसान अपने-अपने खेतों में जोताई-बोआई का कार्य आरंभ करते हैं जिसके एकमात्र प्रतिनिधि के रुप में ओड़िशा के मान्यवर मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी द्वारा अपने हाथों से हल चलाकर उसकी शुरुआत होती है। प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के दिन पुरीधाम

में प्रतिवर्ष अनुष्ठित होती है।चंदन तालाब को नरेन्द्र तालाब भी कहा जाता है।चंदनयात्रा के समय चंदन तालाब को पूरी तरह से स्वच्छ तथा उसके आसपास की जगह को साफ-सूथराकर उसे बिजलीबत्ती की रोशनी से आलोकित कर दिया जाता है। जल प्रिय भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन की चंदनयात्रा उसी का प्रत्यक्ष प्रमाण है।उन २१ दिनों तक भगवान जगन्नाथ अपनी विजय प्रतिमा मदनमोहन के रुप में एक साधारण मानव की तरह ही मानव शरीर के शरदी-गर्मी का अनुभव करते हैं।वे वैशाख-

में भगवान श्रीजगन्नाथजी को चने की दाल का भोग निवेदित किया जाता है जो सबसे शुभकारी माना जाता है। ऐसा भी कहा गया है कि समस्त सनातनी लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की चिर शांति हेतु अक्षय तृतीया के दिन फल-फूल आदि का दान करते हैं। जो भक्त अक्षय तृतीया के दिन सायंकाल भगवान जगन्नाथ को शर्बत निवेदित करता है वह अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। अक्षय तृतीया के दिन जगन्नाथ भगवान की कथा-श्रवण एवं दान- पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व होता है। अक्षयतृतीया के दिन जो भक्त उस दिन महोदधि पवित्र स्नान कर भगवान जगन्नाथ की विधिवत पूजा करता है वह अपने पूरे कुल का उद्धारकर बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होता है।

२१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा

श्री जगन्नाथपुरी धाम(ओड़िशा) में भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन एवं अन्य देव-देवियों आदि की २१दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा अक्षय तृतीया से पुरी के चंदन तालाब जेठ मास की भीषण गर्मी से परेशान होकर चंदन तालाब में कुल २१ दिनों तक शीतलता हेतु चंदन का लेप लगाकर मलमलकर स्नान करते हैं।नौका विहार करते हैं और कुछ देर तालाब के बीचोंबीच निर्मित अपने चंदनघर में अपराह्न से लेकर मध्यरात्रि तक विश्राम करके प्रतिदिन अपने श्रीमंदिर वापस लौट आते हैं।वे अक्षय तृतीया के दिन से श्रीमंदिर की समस्त रीति-नीति के तहत जातभोग संपन्न कर अपराह्न बेला में मदनमोहन, रामकृष्ण, बलराम, पंच पाण्डव, लोकनाथ, मार्कण्डेय, नीलकण्ठ, कपालमोचन, जम्बेश्वर, लक्ष्मी, सरस्वती आदि को अलौकिक शोभायात्रा के मध्य पुरी नगर परिक्रमा कराकर चंदन तालाब लाया जाता है।अनुष्ठित होनेवाली शोभायात्रा अलौकिक होती है जिसमें लगातार २१ दिनों तक आगे-आगे परम्परागत बनाटी कौशल प्रदर्शन,तलवार चालन,पाईक नृत्य और भजन-संकीर्तन के मध्य देव प्रतिमाओं को चंदन तालाब लाया जाता है जहां पर पहले से ही गजदंत आकार की नौकाएं एकसाथ जोडकर तथा हंस के आकार की तैयार कर तथा पूरी तरह से सजाकर रखी रहतीं हैं।पूरे २१ दिनों तक देवों को उन नौकाओं में आरुढ कराकर चंदन तालाब के एक छोर से दूसरे छोर तक नौका विहार कराया जाता है। चंदन तालाब के मध्य अवस्थित चंदनघर ले जाकर उन्हें चंदन का लेप लगाकर सुवासित जल से उन्हें पवित्र स्नान कराया जाता है।चंदन तालाब कुल तीन एकड़ में है जिसे बिजली की रोशनी से अति सुंदर तरीके से आलोकित किया जाता है जिसके दिव्य दर्शन के लिए देश-विदेश के हजारों जगन्नाथ भक्त लगभग एक महीने तक पुरी धाम में ही रहते हैं।

महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत जी को मिली यह मानद डॉक्टरेट उपाधि, उनके नाम ७२वीं मानद डॉक्टरेट उपाधि है। कीट -कीस और कीम्स के प्राण-प्रतिष्ठा तथा राज्यसभा व लोकसभा के पूर्व सांसद प्रोफेसर अच्युत सामंत जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

-अशोक पाण्डेय

किसका सपना?

एक सीधा सवाल। और कोई shortcut नहीं। सच हमेशा simple होता है... लेकिन भारी 'पापा की surgery है... पैसे नहीं थे...offer मिला... और मैंने ले लिया...'बस। कोई justification नहीं...कोई drama नहीं... सिर्फ सच। Reaction– जो उम्मीद के खिलाफ था डायरेक्टर कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने धीरे से कहा–'तुम्हें पता है इसका क्या मतलब है? ''जी।' 'ये सिर्फ company policy violation नहीं है... ये criminal offense है।'आरव ने सिर झुका लिया।'जी।' यहाँ से दो रास्ते थे... लेकिन दोनों आसान नहीं

मुंबई की सुबह...
लोगों के लिए उम्मीद लेकर आती है।
लेकिन आरव के लिए–
ये सिर्फ एक और दिन था...

जिसमें उसे अपने ही फैसलों का बोझ उठाना था। लोकल ट्रेन के दरवाज़े पर खड़ा वो बाहर भागते शहर को देख रहा था...

जैसे हर स्टेशन पर ज़िंदगी उससे आगे निकल रही हो। मोबाइल पर एक मैसेज बार-बार फ्लैश हो रहा था–

'EMI due tomorrow.'
और उसके ठीक नीचे–
माँ का मैसेज।
'बेटा, पापा की दवाई खत्म हो गई है...'
आरव ने स्क्रीन बंद कर दी।
क्योंकि सच ये था–
उसके पास दोनों के लिए पैसे नहीं थे।

कॉर्पोरेट की चमक... और अंदर का खालीपन।

तीन साल पहले... जब आरव ने अपनी पहली नौकरी जॉइन की थी, तो उसे लगा था–

'बस अब सब सेट है।'
बड़ी कंपनी...
अच्छी सैलरी...
एसी ऑफिस...
और LinkedIn पर दिखाने लायक

designation।

लेकिन तीन साल में उसे एक चीज़ समझ आ गई– कॉर्पोरेट दुनिया में 'सैलरी' बढ़ती है...

लेकिन 'सुकून' नहीं।
हर महीने पैसा आता था...
और उसी दिन चला भी जाता था।
किराया...
EMI...
घर का खर्च...
पापा की दवाई...
बहन की फीस...
और अंत में बचता क्या था?
टेंशन।
घर की सच्चाई... जो कोई नहीं देखता।

आरव के पिता पहले एक छोटे बिज़नेस में थे। अच्छा चलता था... इतना कि घर में कभी पैसों की कमी नहीं रही।

लेकिन एक गलत फैसला...
और सब खत्म।

कर्ज़ इतना बढ़ गया कि घर तक गिरवी रखना पड़ा।

उसी समय...
आरव की नौकरी लगी।
और उसी दिन से–
वो 'बेटा' कम...
और 'कमाने वाला इंसान' ज़्यादा बन गया।
ऑफिस–जहाँ इंसान नहीं, नंबर चलते हैं

'आरव, this quarter your performance is below expectations.'

उसके मैनेजर ने बिना आँख उठाए कहा।
'लेकिन सर, मैंने सारे targets
पूरे किए हैं...'
'Targets enough नहीं हैं...
impact चाहिए।'
आरव चुप हो गया।
क्योंकि उसे पता था–
यहाँ logic नहीं चलता...
यहाँ perception चलता है।
उसके सामने ही उसका colleague, करण–
जो काम से ज़्यादा networking
करता था–
promotion की list में था।
और वो?
'Needs Improvement.'

पहली दरार–जब सपना और जिम्मेदारी टकराते हैं। उस रात आरव घर पहुँचा तो माँ दरवाज़े पर खड़ी थीं। 'बेटा, डॉक्टर ने कहा है पापा की surgery जल्दी करनी पड़ेगी...'

आरव के पैरों के नीचे से .
जमीन खिसक गई।
'कितना खर्च आएगा?'
'करीब ३ लाख...'
कमरे में सन्नाटा छा गया।
तीन लाख...
उसके लिए ये सिर्फ एक नंबर नहीं था–
ये एक दीवार थी...
जिसे वो पार नहीं कर सकता था।
और उसी रात... एक ऑफर आया
फोन बजा।
Unknown number।
'Hello, आरव बोल रहे हैं?'
'जी।'
'मैं विवेक मेहता बोल रहा हूँ...
आपकी कंपनी के competitor से।'
आरव चौंक गया।

'हम आपके काम को काफी समय से observe कर रहे हैं...

और हमें लगता है कि आप
better deserve करते हैं।'
आरव चुप रहा।
'हम आपको ७०% salary hike
दे सकते हैं...
लेकिन एक छोटा सा condition है।'
'क्या?'
फोन के उस तरफ कुछ
सेकंड की चुप्पी रही...
फिर आवाज़ आई–
'आपको अपनी current company
का कुछ internal data share
करना होगा।'
यहीं से असली कहानी शुरू होती है
एक तरफ–
पिता की surgery...
घर की जिम्मेदारी...
पैसों की जरूरत।
दूसरी तरफ–

ईमानदारी...
और वो लाइन... जिसे पार करने के बाद वापसी नहीं होती।
आरव खिड़की के पास खड़ा था...
नीचे शहर भाग रहा था...
और उसके अंदर–
सब कुछ रुक गया था।
फोन कटने के बाद...
कमरे में सन्नाटा नहीं था–
शोर था।
ऐसा शोर जो बाहर नहीं...
अंदर चलता है।
आरव ने मोबाइल मेज पर रख दिया...
लेकिन उसका दिमाग वहीं अटका हुआ था–
'७०% hike...'
'३ लाख surgery...'
'internal data...'

तीनों शब्द एक-दूसरे से टकरा रहे थे।
सही और गलत... किताबों में
आसान होते हैं 'अगर मैं ये करूँ...
तो क्या मैं गलत हो जाऊँगा?'
उसने खुद से पूछा।
फिर तुरंत एक और सवाल आया–
'अगर मैं नहीं करूँ... और पापा की surgery ना हो पाए... तो क्या वो सही होगा?' यहीं असली समस्या थी।
क्योंकि यहाँ कोई 'सही' option
था ही नहीं।
ऑफिस–जहाँ सब जानते हैं,
लेकिन कोई बोलता नहीं
अगले दिन ऑफिस में सब कुछ
normal था।
लोग हँस रहे थे...
मीटिंग्स चल रही थीं...

कॉफी मशीन के पास gossip हो रहा था।
लेकिन आरव के लिए–
सब कुछ अलग था।
उसे लग रहा था जैसे हर कोई
उसे देख रहा है...
जैसे सबको पता है कि वो
क्या सोच रहा है।
'भाई, तू थोड़ा stressed लग रहा है,
' करण ने पूछा।
आरव ने हल्का सा मुस्कुराया–
'बस काम का pressure है।'
करण हँसा–
'Pressure नहीं भाई... game समझ।'
'मतलब?'
करण थोड़ा करीब आया...
'यहाँ मेहनत करने से कुछ नहीं होता...
यहाँ सही लोगों के साथ होना पड़ता है।'
आरव समझ गया।
ये वही indirect बात थी–
जो सब जानते हैं, लेकिन कोई
खुलकर नहीं कहता।
पहला कदम–जो वापस नहीं
लिया जा सकता
उस शाम...
आरव ने फिर वही नंबर dial किया।
कुछ सेकंड बाद कॉल उठी।
'तो आपने सोच लिया?'
आरव की आवाज़ धीमी थी–
'अगर मैं ये करूँ... तो क्या
guarantee है कि मुझे रदं मिल जाएगी?'
दूसरी तरफ से तुरंत जवाब आया–
'Offer letter पहले मिलेगा...
data बाद में।'
आरव ने आँखें बंद कर लीं।
ये deal साफ थी...
और खतरनाक भी।
'ठीक है... मैं ready हूँ।'
यहीं से गिरावट शुरू होती है
पहली बार data भेजना–
उतना मुश्किल नहीं था जितना
उसने सोचा था।
एक excel file...
कुछ client details...
कुछ internal numbers...
बस।

कोई alarm नहीं बजा...
कोई पकड़ा नहीं गया।
और सबसे खतरनाक चीज़–
कुछ हुआ ही नहीं।
गलत काम का पहला असर यही
होता है-कुछ नहीं होता
अगले दिन...
सब कुछ normal था।
कोई suspicion नहीं...
कोई सवाल नहीं।
और उसी शाम–
उसके email पर offer letter आ गया।
'Salary: ७०% hike'
आरव ने स्क्रीन को घूरा।
उसे खुश होना चाहिए था...
लेकिन वो नहीं था।
क्योंकि अंदर कहीं...
उसे पता था–
ये जीत नहीं है...
ये शुरुआत है।
घर–जहाँ सच छुपाना सबसे
मुश्किल होता है
'बेटा, तू आज बहुत चुप है,
' माँ ने पूछा।
'बस थक गया हूँ,' आरव ने कहा।
पापा बिस्तर पर लेटे थे...
कमज़ोर... लेकिन मुस्कुरा रहे थे।
'नौकरी कैसी चल रही है?'
आरव ने एक सेकंड के लिए
उनकी तरफ देखा...
फिर नज़र हटा ली।
'ठीक है...'
उसे लगा जैसे उसने झूठ नहीं बोला...
लेकिन सच भी नहीं कहा।
दूसरा झटका–जब आप
सोचते हो सब control में है
तीन दिन बाद...
ऑफिस में अचानक meeting बुलाई गई।
HR...
Senior management...
और IT team।
सभी के चेहरे serious थे।
'हमारे internal data में
breach हुआ है...'
कमरे में सन्नाटा छा गया।

आरव का दिल तेज़ धड़कने लगा।
'और हमें strong suspicion है
कि ये अंदर से हुआ है।'
अब साँस लेना भी मुश्किल लग रहा था।
डर–जो हर सेकंड बढ़ता है
'हमने investigation शुरू कर दी है,
' IT head ने कहा।
'और जो भी responsible होगा...
उसके खिलाफ legal action
लिया जाएगा।'
Legal action।
मतलब सिर्फ job नहीं जाएगी...
career खत्म।
यहीं पर असली टेस्ट है
उस रात...
आरव सो नहीं
पाया।
एक
तरफ–

offer
letter।
दूसरी तरफ–
investigation।
तीसरी तरफ–
पापा की surgery।
और सबसे ऊपर–
खुद से नज़र मिलाने का डर।
और तभी... एक unexpected call आया
फोन बजा।
इस बार...

उसकी current company
के senior director का कॉल था।
'आरव, can you come to my
cabin tomorrow morning?'
बस इतना कहा...
और कॉल कट।
अगली सुबह...
ऑफिस वही था–
लोग वही थे–
लेकिन आरव के लिए सब कुछ
बदल चुका था।
हर कदम भारी लग रहा था...
जैसे वो अपने पैरों से नहीं...
अपने फैसलों से चल रहा हो।
Director का केबिन–
जहाँ सच
छुपाना
मुश्किल
होता है
'Come
in.'
दरवाज़ा खोलते
ही ठंडी हवा का
झोंका लगा...
लेकिन उसके माथे पर पसीना था।
डायरेक्टर, शांत बैठे थे।
टेबल पर एक लैपटॉप खुला था।
'बैठो, आरव।'
आरव बैठ गया।

कुछ सेकंड...
कोई कुछ नहीं बोला।
फिर डायरेक्टर ने स्क्रीन उसकी तरफ घुमा दी।
'ये देखो।'
स्क्रीन पर logs थे...
email records...
file transfers...
और एक नाम–
आरव।
झूठ बोलने का मौका...
जो हर कोई लेता है
'कुछ कहना है?' डायरेक्टर ने पूछा।
यहीं वो पल था–
जहाँ इंसान खुद को बचा सकता है...
या सच बोल सकता है।
आरव के दिमाग में हजारों बहाने आए–
'मुझे नहीं पता...'
'किसी ने मेरा system use किया होगा...'
'ये misunderstanding है...'
सब आसान थे।
सब safe थे।
लेकिन... एक problem थी–
वो खुद से झूठ बोलते-बोलते थक चुका था।
पहली बार–सच बोला गया
'सर... ये मैंने किया है।'
कमरे में सन्नाटा छा गया।
डायरेक्टर की आँखें पहली बार उसकी तरफ उठीं।
'क्यों?' एक सीधा सवाल।
और कोई shortcut नहीं।
सच हमेशा simple होता है... लेकिन भारी
'पापा की surgery है...
पैसे नहीं थे...
offer मिला... और मैंने ले लिया...'
बस।
कोई justification नहीं...
कोई drama नहीं...
सिर्फ सच।
Reaction–जो उम्मीद के खिलाफ था
डायरेक्टर कुछ देर चुप रहे।
फिर उन्होंने धीरे से कहा–
'तुम्हें पता है इसका क्या मतलब है?'
'जी।' 'ये सिर्फ company policy violation नहीं है...
ये criminal offense है।'
आरव ने सिर झुका लिया।
'जी।'
यहाँ से दो रास्ते थे... लेकिन दोनों आसान नहीं
डायरेक्टर ने कुर्सी से पीछे झुकते हुए कहा–
'हम तुम्हारे खिलाफ police case कर सकते हैं...'
आरव ने कुछ नहीं कहा।
क्योंकि वो जानता था–
ये सच है।
'या...'
आरव ने सिर उठाया।
'तुम resign करो...
immediately...
और हम इसे internal matter रखेंगे।'
ये राहत नहीं थी–ये सजा का दूसरा रूप था
Resign करना मतलब–
नौकरी खत्म
reputation खत्म
future questionable
लेकिन police case से बचना...
शायद यही best था जो उसे मिल सकता था।
'मैं resign कर देता हूँ, सर...'
आवाज़ धीमी थी...
लेकिन साफ थी।
बाहर निकलते वक्त–सब कुछ बदल चुका था
ऑफिस वही था...
लेकिन अब वो उस जगह का हिस्सा नहीं था।
लोग अब भी हँस रहे थे...
काम कर रहे थे...
जैसे कुछ हुआ ही नहीं।
और यही सबसे अजीब था–
दुनिया कभी नहीं रुकती...
चाहे तुम्हारी दुनिया टूट जाए।
घर–जहाँ सच छुपाना अब possible नहीं था
उस रात...
आरव ने माँ को सब बता दिया।
हर चीज़।
गलती...
decision...
resignation...
कमरे में silence था।
माँ की आँखों में आँसू थे...
लेकिन गुस्सा नहीं।
'तूने गलत किया...'
ये पहला वाक्य था।
'लेकिन तू अकेला नहीं है...
हम साथ हैं।'
पिता–जिनके लिए ये सब हुआ
पापा ने उसे पास बुलाया।
कमज़ोर हाथ से उसका हाथ पकड़ा...
'पैसे के लिए खुद को मत बेच...'
आवाज़ धीमी थी...
लेकिन असर भारी।
'operation हो जाएगा...
देर से सही...
लेकिन इज्जत से।'
सच–जो देर से समझ आता है
आरव ने पहली बार महसूस किया–
वो जिस चीज़ को 'solution' समझ रहा था... वो असल में 'shortcut' था।
और shortcuts...
हमेशा short नहीं होते।
कभी-कभी वो सीधा गिरा देते हैं।
Ending नहीं–शुरुआत
दो हफ्ते बाद...
आरव के पास job नहीं थी।
Savings कम थीं...
Problems वही थीं।
लेकिन एक चीज़ बदल गई थी–
उसने खुद से नज़र मिलाना शुरू कर दिया था।
'कभी-कभी ज़िंदगी हमें ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है,
जहाँ सही और गलत के बीच नहीं...
बल्कि दो गलत के बीच चुनाव करना पड़ता है। सवाल ये नहीं कि आरव ने क्या किया–
सवाल ये है...
उस जगह पर तुम क्या करते?'

MONAD UNIVERSITY
Established by UP State Govt. Act 23 of 2010
& U/S 2 (f) of U.G.C. Act 1956
Recognized & Approved by :
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

तट की पुकार:

डायरी के वे पीले पन्ने

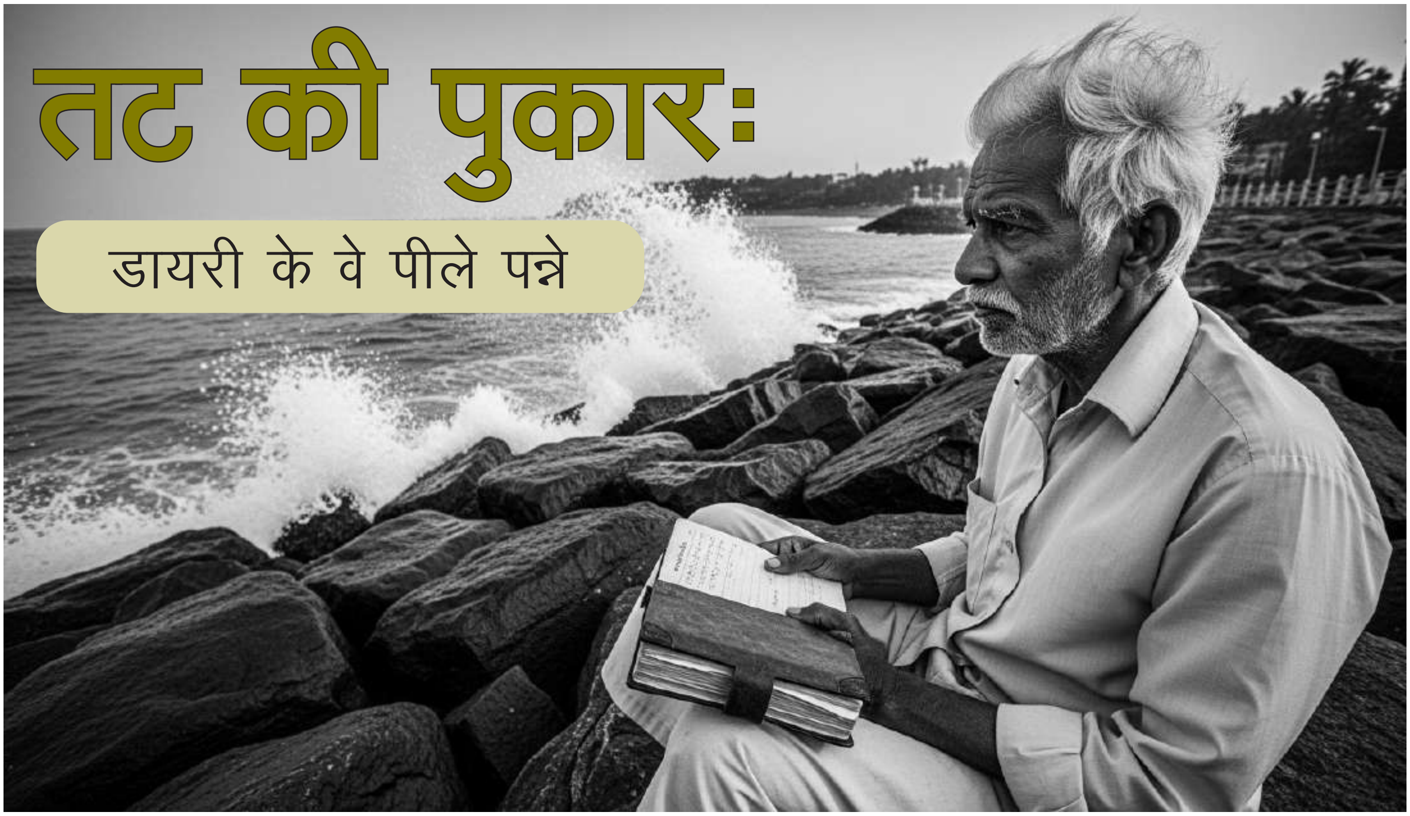

सपनों की नगरी और संघर्ष का पसीना नील के आग्रह पर दीनानाथ ने डायरी का एक पीला पड़ चुका पन्ना खोला। ऊपर तारीख लिखी थी–१५ अगस्त, १९७५। 'उन दिनों बम्बई आज जैसी कंक्रीट का जंगल नहीं थी,' दीनानाथ की आवाज़ में एक पुरानी खनक लौट आई। 'मैं २२ साल का था जब उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव से भागकर यहाँ आया था। जेब में मात्र दस रुपये थे और हाथ में फटे हुए झोले में कुछ कविताएँ। मेरा सपना था कि मेरी कलम इस शहर की धड़कन बने।

मरीन ड्राइव का वह मौन कोना मुंबई की शामें कभी शांत नहीं होतीं। यहाँ की हवाओं में भी एक अजीब सी हड़बड़ी होती है, जैसे हर लहर को कहीं पहुँचने की जल्दी हो। लेकिन मरीन ड्राइव के उस सुदूर कोने पर, जहाँ समंदर की लहरें काली चट्टानों से टकराकर एक शाश्वत संगीत पैदा करती हैं, वहाँ एक बुजुर्ग साया पिछले तीस वर्षों से हर शाम दिखाई देता था। नाम था–दीनानाथ। सफेद झक बाल जो समंदर की नमक वाली हवा से थोड़े सख्त हो गए थे, आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा जो बार-बार नाक से नीचे फिसल जाता, और बगल में दबी एक पुरानी, चमड़े की जिल्द वाली डायरी। दीनानाथ उस पीढ़ी के अंतिम अवशेष थे जब मुंबई 'बम्बई' हुआ करती थी। लोग उन्हें 'पुराने दौर का लेखक' कहते थे, हालांकि उनकी कोई किताब कभी किसी बड़े बुकस्टोर की शोभा नहीं बनी थी। उनकी पूरी जायदाद, उनका पूरा वजूद, उस डायरी के ढाई हज़ार से अधिक पन्नों में सिमटा हुआ था।

एक शाम, नील नाम का एक युवा पत्रकार, जो अपनी 'डिजिटल थकान' से बचने के लिए समंदर किनारे सुकून तलाश रहा था, दीनानाथ के पास जा बैठा। नील की पीढ़ी 'इंस्टेंट' की पीढ़ी थी, जहाँ यादें गूगल फोटोज़ और क्लाउड पर सेव होती थीं। 'बाबा, आप रोज यहाँ क्या लिखते हैं? क्या यह कोई महाकाव्य है?' नील ने हिचकिचाते हुए पूछा। दीनानाथ ने अपनी धुंधली आँखों से नील को देखा। उनकी मुस्कुराहट में एक अजीब सी खामोशी थी। 'बेटा, मैं लिखता नहीं हूँ। मैं तो बस उन यादों को पन्नों पर रोक कर रखता हूँ जो वक्त के रेले में बह जाने को बेताब हैं। लोग कहते हैं कि समय घाव भर देता है, पर मेरा मानना है कि समय बस यादों पर धूल जमा देता है। मैं बस उस धूल को झाड़ता हूँ।

सपनों की नगरी और संघर्ष का पसीना नील के आग्रह पर दीनानाथ ने डायरी का एक पीला पड़ चुका पन्ना खोला। ऊपर तारीख लिखी थी–१५ अगस्त, १९७५। 'उन दिनों बम्बई आज

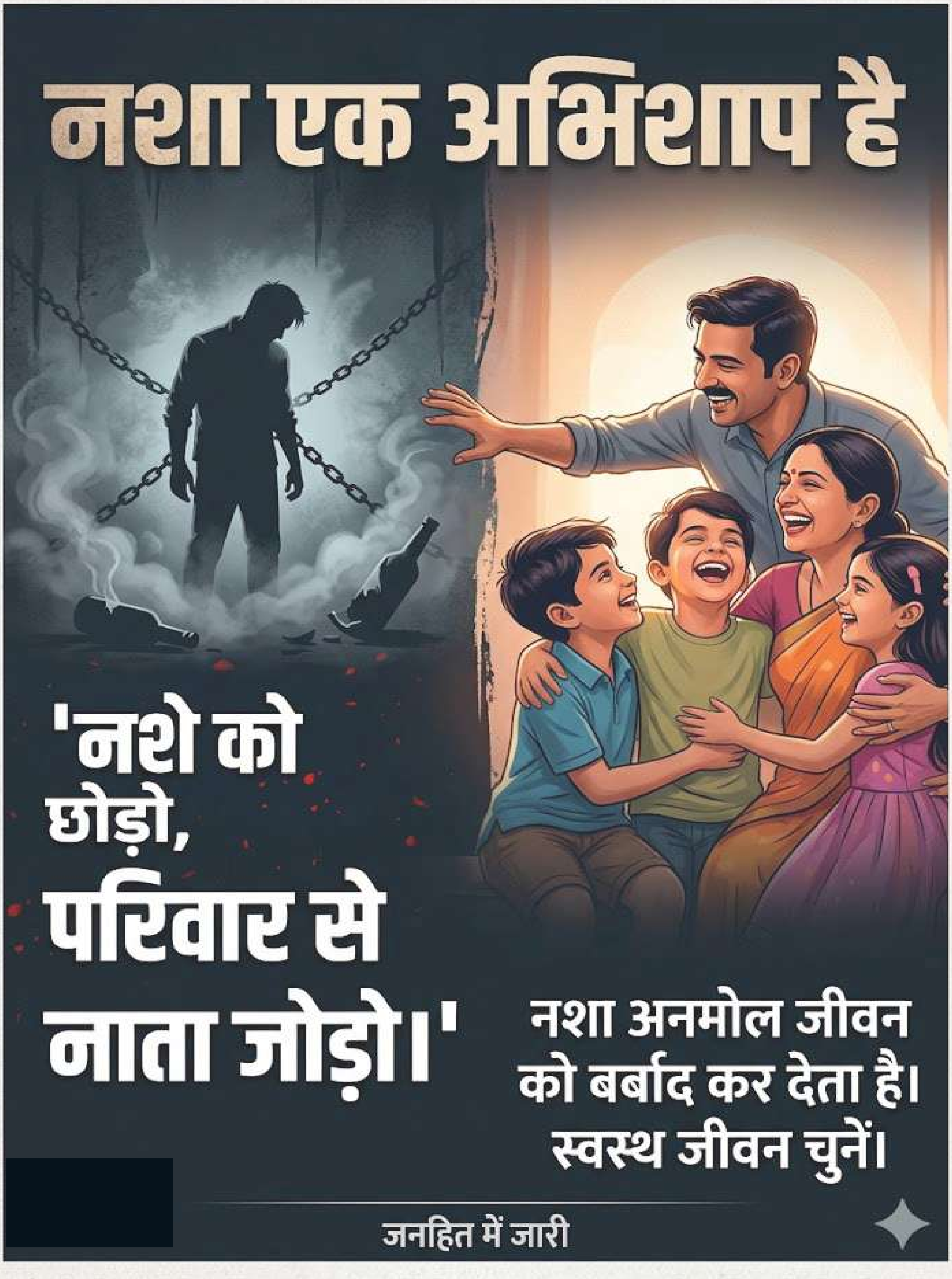

नशा एक अभिशाप है
'नशे को छोड़ो, परिवार से नाता जोड़ो।'
नशा अनमोल जीवन को बर्बाद कर देता है। स्वस्थ जीवन चुनें।
[redacted]
जनहित में जारी

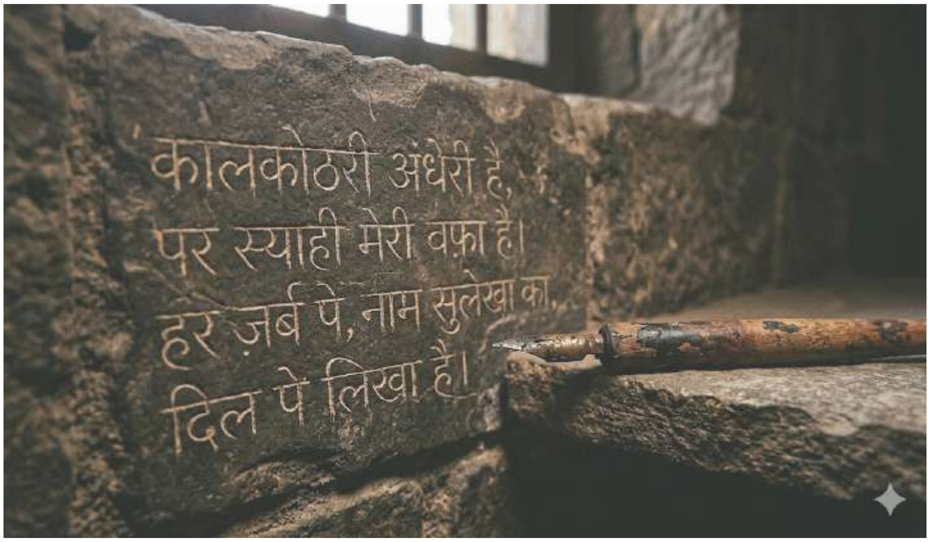

जैसी कंक्रीट का जंगल नहीं थी,' दीनानाथ की आवाज़ में एक पुरानी खनक लौट आई। 'मैं २२ साल का था जब उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव से भागकर यहाँ आया था। जेब में मात्र दस रुपये थे और हाथ में फटे हुए झोले में कुछ कविताएँ। मेरा सपना था कि मेरी कलम इस शहर की धड़कन बने। 'दीनानाथ ने बताया कि कैसे उन्होंने शुरुआती महीनों में फुटपाथ को अपना बिस्तर बनाया। 'बेटा, फुटपाथ पर सोना भी एक कला है।

आपको पता होना चाहिए कि किस कोने में हवा कम लगती है और कहाँ पुलिस वाला आपको लाठी मारकर नहीं उठाएगा।' उन्होंने धोबी घाट पर भारी कपड़े धोए, फोर्ट के छोटे होटलों में रात भर बर्तन माँजे, लेकिन हर सुबह वे गिरगांव चौपाटी पर बैठकर अपनी डायरी में नई पंक्तियाँ लिखते थे। उनकी स्याही पसीने और मेहनत से बनी थी।

सुलेखा-किताबों के बीच खिला एक फूल कहानी का सबसे खूबसूरत मोड़ तब आया जब दीनानाथ की मुलाकात सुलेखा से हुई। सुलेखा 'एशियाटिक लाइब्रेरी' में एक छोटी सी क्लर्क थी। वह पुराने अखबारों और धूल भरी फाइलों के बीच एक ताज़ी हवा के झोंके जैसी थी।'वह मेरी कविताओं की पहली और सबसे बड़ी आलोचक थी,' दीनानाथ की आँखों में एक चमक आ गई। सुलेखा को साहित्य की गहरी समझ थी। वह अक्सर कहती थी, 'दीना, तुम्हारी लिखावट में वह कच्चा दर्द है जो इस शहर की तंग गलियों में रहने वाले हर इंसान का है। तुम एक दिन बहुत बड़े लेखक बनोगे। 'उनका प्रेम 'कैफे लियोपोल्ड' की भाप उड़ती चाय और गिरगांव की पुरानी चालों के बीच परवान चढ़ा। सुलेखा अक्सर उन्हें पुराने कवियों की दुर्लभ किताबें लाकर देती थी। उन दोनों के बीच संवाद शब्दों का नहीं, मौन का था। वे घंटों समंदर को देखते रहते और एक-दूसरे का हाथ थामे भविष्य के सपने बुनते। सुलेखा ने वादा किया था कि जिस दिन दीना की पहली किताब छपेगी, वह उसका पहला पन्ना अपने हाथों से सजाएगी।

आपातकाल का काला साया और जेल की कालकोठरी लेकिन नियति की स्याही कुछ और ही लिखने को बेताब थी। जून १९७५ में देश में 'आपातकाल' (Emergency) लागू हो गया। अभिव्यक्ति की आज़ादी पर सख्त पहरा बिठा दिया गया। दीनानाथ, जो स्वभाव से एक विद्रोही कवि थे, उन्होंने एक ऐसी नज़्म लिख दी जो सीधे सत्ता की कमियों पर प्रहार करती थी। एक तूफानी रात, जब मुंबई की बारिश कहर ढा रही थी, कुछ सादे लिबास में पुलिस वाले दीनानाथ के छोटे से कमरे में घुस आए। उनकी डायरियाँ ज़ब्त कर ली गईं और उन्हें बिना किसी वारंट के जेल में डाल दिया गया। सुलेखा पागलों की तरह स्टेशन से लेकर थानों तक चक्कर काटती रही, लेकिन उस दौर में किसी की सुनने वाला कोई नहीं था। 'जेल की कालकोठरी में मुझे कागज़ और कलम नहीं दिया जाता था,' दीनानाथ ने याद करते हुए कहा। 'मैंने अपनी कविताएँ अपनी जेल की दीवार पर नाखूनों से खुरच कर लिखीं। मुझे बस एक ही डर सताता था कि सुलेखा मुझे भूल न जाए।

बिछड़न का लंबा इंतज़ार दो साल बाद जब आपातकाल हटा और दीनानाथ रिहा हुए, तो बम्बई की फिज़ा बदल चुकी थी। वे दौड़ते हुए लाइब्रेरी पहुँचे, लेकिन सुलेखा वहां नहीं थी। उसके पिता का तबादला कहीं दूर हो चुका था और वे बिना कोई पता छोड़े चले गए थे। दीनानाथ ने हार नहीं मानी। उन्होंने अगले चालीस साल सुलेखा की तलाश में बिता दिए। वे हर उस जगह गए जहाँ उनके प्रेम की यादें थीं। उन्होंने शादी नहीं की। 'अगर सुलेखा कभी वापस आई और उसने मुझे किसी और के साथ देखा, तो मेरी वफ़ा और मेरा साहित्य दोनों ही झूठे हो जाएंगे,' उन्होंने नील की आँखों में झांकते हुए कहा।

डिजिटल लहर और एक चमत्कार नील, जो

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-108

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

प्रश्नः भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?

प्रश्नः एक वर्ष में कितने दिन होते हैं?

प्रश्नः हमारे सौरमंडल में सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है?

प्रश्नः भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन सा है?

प्रश्नः 'रेगिस्तान का जहाज' किस जानवर को कहा जाता है?

प्रश्नः सूरज किस दिशा से उगता है?

प्रश्नः एक इंद्रधनुष (Rainbow) में कितने रंग होते हैं?

प्रश्नः हमारे शरीर में कितनी हड्डियां होती हैं?

प्रश्नः टेलीफोन का आविष्कार किसने किया था?

प्रश्नः विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर कौन सा है?

प्रश्नः भारत की राजधानी क्या है?

प्रश्नः शहद हमें कहाँ से प्राप्त होता है?

प्रश्नः साल के किस महीने में सबसे कम दिन होते हैं?

प्रश्नः कंप्यूटर का मस्तिष्क (Brain of Computer) किसे कहा जाता है?

प्रश्नः क्रिकेट खेल में एक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं?

प्रश्नः दुनिया का सबसे बड़ा जानवर कौन सा है?

प्रश्नः हमारे देश का राष्ट्रीय गान (National Anthem) किसने लिखा था?

प्रश्नः शिक्षक दिवस (Teacher's Day) कब मनाया जाता है?

प्रश्नः पत्तियों का रंग हरा क्यों होता है?

प्रश्नः सौरमंडल के किस ग्रह को 'लाल ग्रह' (Red Planet) कहा जाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....

....

....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

अब तक इस कहानी में पूरी तरह डूब चुका था, उसने फैसला किया कि वह इस महान प्रेम और त्याग को व्यर्थ नहीं जाने देगा। उसने दीनानाथ की डायरी के कुछ चुनिंदा अंशों को अपने सोशल मीडिया और 'स्वर्णिम मुंबई' पोर्टल पर एक विशेष श्रृंखला के रूप में प्रकाशित करना शुरू किया। उसने इसका शीर्षक दिया–'बम्बई का अंतिम आशिक'। यह श्रृंखला रातों-रात इंटरनेट पर वायरल हो गई। लाखों लोग उस बूढ़े लेखक की तलाश में जुट गए जिसने आधी सदी तक अपनी प्रेमिका का इंतज़ार किया था। हज़ारों लोगों ने अपनी-अपनी यादें साझा कीं। तभी, पुणे के एक प्रतिष्ठित वृद्धाश्रम से एक नर्स का फोन आया। 'नील, हमारे यहाँ एक बुजुर्ग महिला हैं जो पिछले कई दिनों से आपकी पोस्ट को अपनी धुंधली आँखों से देख रही हैं और बार-बार एक ही नाम ले रही हैं–दीना।

'अंतिम मिलन–जहाँ शब्द कम पड़ गए नील दीनानाथ को लेकर पुणे पहुँचा। वृद्धाश्रम के उस शांत बरामदे में, एक महिला व्हीलचेयर पर बैठी ढलते सूरज को देख रही थी। दीनानाथ के पैर कांप रहे थे। जैसे ही वे करीब पहुँचे, दीनानाथ ने अपनी वही पुरानी कविता की पहली पंक्ति धीमी आवाज़ में पढ़ी।

सुलेखा धीरे से मुड़ी। उसकी झुर्रियों से भरे चेहरे पर एक अलौकिक मुस्कान थी। 'दीना... तुम बहुत देर से आए। पर मुझे पता था कि तुम आओगे। 'उनका मिलन किसी फिल्मी हंगामे जैसा नहीं था। साठ साल के अंतराल ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया था, लेकिन उनकी रूह आज भी वही गिरगांव वाली थी। सुलेखा ने अपने पास रखा एक छोटा सा डिब्बा खोला। उसमें दीनानाथ का वही पहला पत्र था जो उन्होंने १९७४ में लिखा था।

नील ने दीनानाथ की पूरी डायरी को एक पुस्तक का रूप दिया जिसका नाम रखा–'तट की पुकार'। यह पुस्तक उस साल की सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि बनी। लेकिन अब दीनानाथ मरीन ड्राइव पर नहीं बैठते थे। उन्होंने अपनी डायरी के सबसे आखिरी पन्ने पर एक अंतिम संदेश लिखाः 'साहित्य वह नहीं जो सफ़ेद कागज़ों पर काली स्याही से लिखा जाए। साहित्य वह है जो खामोशी के साथ जीया जाए। मेरी कहानी पूरी हुई, क्योंकि मेरा प्रेम पूरा हुआ। अब इस कलम को विश्राम की ज़रूरत है।

'दीनानाथ और सुलेखा ने अपने जीवन के अंतिम कुछ महीने एक-दूसरे का हाथ थामे बिताए। जब दीनानाथ का निधन हुआ, तो उनके सिरहाने वही पुरानी डायरी थी, जिसका आखिरी पन्ना कोरा था–शायद इसलिए कि कुछ कहानियाँ लिखने के लिए शब्द बने ही नहीं हैं। ■ -

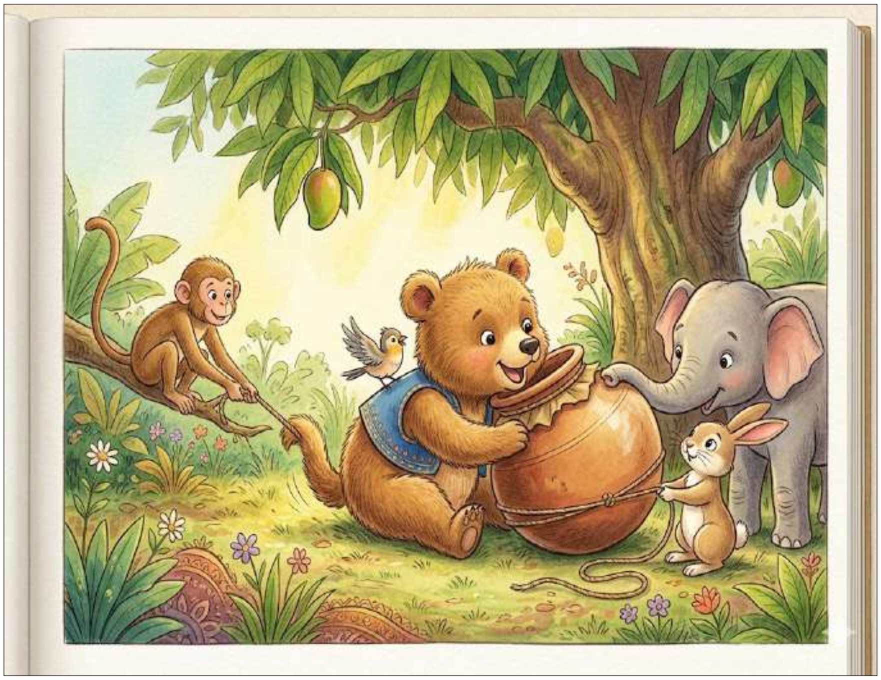

लालची गोलू और शहद का घड़ा

एक बहुत ही प्यारा और नटखट भालू था, जिसका नाम था गोलू। गोलू को शहद (Honey) इतना पसंद था कि वह दिन भर बस शहद की ही तलाश में रहता था। एक दिन गोलू को जंगल में एक पुराने पेड़ के नीचे मिट्टी का एक बड़ा सा घड़ा मिला। जब गोलू ने उसे खोलकर देखा, तो उसकी आँखें चमक उठीं–वह घड़ा ताज़ा और मीठे शहद से लबालब भरा हुआ था!

गोलू ने सोचा, 'वाह! आज तो मज़ा आ गया। इतना सारा शहद मैं अकेले ही खाऊँगा, किसी को नहीं दूँगा।'

तभी वहाँ उसका दोस्त चीकू खरगोश आया और बोला, 'गोलू भाई, क्या मुझे भी थोड़ा शहद मिलेगा? मुझे बहुत भूख लगी है।'

गोलू ने मुँह बनाकर कहा, 'नहीं-नहीं चीकू, यह तो बहुत कम है, मेरे लिए भी पूरा नहीं पड़ेगा।' चीकू उदास होकर चला गया।

गोलू फटाफट शहद चाटने लगा। वह इतना लालची हो गया था कि उसने अपना पूरा मुँह घड़े के अंदर डाल दिया। लेकिन जैसे ही उसने मुँह बाहर निकालने की कोशिश की, उसका सिर घड़े में फँस गया! अब गोलू घबरा गया। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह चिल्लाने लगा, 'बचाओ! बचाओ!'

चीकू खरगोश ने गोलू की आवाज़ सुनी और वह तुरंत अपने और दोस्तों को बुला लाया। सबने मिलकर धीरे से घड़े को खींचा और गोलू का सिर बाहर निकाला। गोलू का पूरा चेहरा शहद से चिपचिपा हो गया था और वह शर्मिंदा था। उसने चीकू से माफी मांगी और सारा शहद अपने दोस्तों के साथ मिलकर बाँटकर खाया।

नाममात्र की नारीशक्ति और महिला आरक्षण का पेच...

'नारीशक्ति'–यह शब्द अब इतना इस्तेमाल हो चुका है कि कई बार यह सच्चाई से ज्यादा एक 'सजावटी टैगलाइन' जैसा लगता है। हर साल महिला दिवस पर भाषण होते हैं, पोस्टर छपते हैं, सोशल मीडिया पर बड़े-बड़े संदेश घूमते हैं... और अगले ही दिन सब कुछ वैसे का वैसा। अगर यही सशक्तिकरण है, तो यह काफी सस्ता और सुविधाजनक मॉडल है–जहां बदलाव का दिखावा करना असली बदलाव से आसान है। आप किसी भी कॉर्पोरेट ऑफिस का उदाहरण ले लीजिए। मंच पर 'women leadership' की बात होगी, लेकिन बोर्डरूम में आज भी ज्यादातर कुर्सियां पुरुषों के पास हैं। और जहां महिलाएं पहुंच भी जाती हैं, वहां उन्हें 'exception' की तरह पेश किया जाता है–जैसे यह कोई सामान्य बात नहीं, बल्कि एक खास उपलब्धि है। सवाल यह है कि अगर सिस्टम सच में बराबरी देता, तो क्या यह 'exception' शब्द ही बचता?

अब ज़रा राजनीति की बात करें, जहां महिला आरक्षण को बड़े गर्व से पेश किया जाता है। कागज़ पर सब कुछ सही लगता है–सीटें तय, प्रतिनिधित्व सुनिश्चित। लेकिन ज़मीनी हकीकत कुछ और कहती है। पंचायतों से लेकर स्थानीय निकायों तक, एक शब्द आम है–'सरपंच पति'। नाम महिला का, कुर्सी महिला की, लेकिन फैसले कोई और ले रहा है। यह सशक्तिकरण नहीं, बल्कि एक सिस्टम का शॉर्टकट है–जहां नियमों का पालन भी हो जाए और असली शक्ति भी वहीं बनी रहे। और अगर आपको लगता है कि यह सिर्फ गांवों तक सीमित है, तो थोड़ा ध्यान से देखिए।

कागज़ पर सब कुछ सही लगता है–सीटें तय, प्रतिनिधित्व सुनिश्चित। लेकिन ज़मीनी हकीकत कुछ और कहती है। पंचायतों से लेकर स्थानीय निकायों तक, एक शब्द आम है–'सरपंच पति'। नाम महिला का, कुर्सी महिला की, लेकिन फैसले कोई और ले रहा है। यह सशक्तिकरण नहीं, बल्कि एक सिस्टम का शॉर्टकट है–जहां नियमों का पालन भी हो जाए और असली शक्ति भी वहीं बनी रहे। और अगर आपको लगता है कि यह सिर्फ गांवों तक सीमित है, तो ...

बड़े स्तर की राजनीति में भी 'प्रॉक्सी पॉलिटिक्स' कोई नया खेल नहीं है। परिवारवाद के अंदर महिलाओं को आगे लाकर सीट सुरक्षित कर ली जाती है, लेकिन असली नियंत्रण वहीं रहता है जहां पहले था। यह वैसा ही है जैसे किसी कंपनी में CEO बदल दिया जाए, लेकिन सारे फैसले वही पुराने लोग लेते रहें।

अब एक और असहज सवाल–क्या आरक्षण हमेशा सही लोगों तक पहुंचता है? सच यह है कि इसका फायदा अक्सर वही महिलाएं उठा पाती हैं, जिनके पास पहले से कुछ संसाधन, संपर्क या सामाजिक ताकत होती है। जो महिला वास्तव में हाशिये पर है–गांव की, गरीब, बिना शिक्षा के–वह आज भी उसी जगह खड़ी है। यानी, सिस्टम के अंदर भी एक 'फिल्टर' काम करता है, जो कमजोर को और पीछे कर देता है। इस पूरे खेल का सबसे बड़ा भ्रम यह है कि हम कानून बनाकर मानसिकता बदलने की उम्मीद करते हैं। जबकि सच्चाई उलटी है–जब तक मानसिकता नहीं बदलेगी, कानून सिर्फ एक औपचारिकता बनकर रह जाएगा। घर के अंदर आज भी कितनी बेटियों से पूछा जाता है कि वे क्या बनना चाहती हैं? और कितनों को यह बताया जाता है कि 'इतना काफी है'? जब शुरुआत ही बराबरी से नहीं होती, तो अंत में बराबरी की उम्मीद करना खुद को धोखा देना है।

तो समाधान क्या है? सीधा जवाब है–'आसान कुछ भी नहीं है।' शिक्षा की बात करना आसान है, लेकिन ऐसी शिक्षा जो सोच बदल दे, वह अभी भी दुर्लभ है। आर्थिक आत्मनिर्भरता की बात होती है, लेकिन कितनी महिलाओं को अपने ही कमाए पैसों पर पूरा नियंत्रण है? और सबसे कठिन–समाज की सोच। यह वही जगह है जहां हर बदलाव आकर अटक जाता है, क्योंकि यहां कोई कानून सीधे काम नहीं करता।

इसलिए, अगर ईमानदारी से देखा जाए, तो 'नारीशक्ति' का असली संकट यह नहीं है कि महिलाओं को मौके नहीं मिल रहे, बल्कि यह है कि जो मौके मिल भी रहे हैं, वे आधे-अधूरे और कई बार नियंत्रित हैं। और महिला आरक्षण–यह एक जरूरी कदम हो सकता है, लेकिन इसे 'फाइनल सॉल्यूशन' मान लेना एक गंभीर भूल है। आखिर में बात बहुत साफ है– अगर सशक्तिकरण सिर्फ पोस्टरों, भाषणों और आंकड़ों तक सीमित रहेगा, तो यह एक अच्छी कहानी तो बनेगा, लेकिन सच्चाई नहीं बदलेगा। और जब तक महिला खुद अपने फैसले लेने की स्थिति में नहीं आती, तब तक हर आरक्षण, हर योजना, हर दावा–आधा ही रहेगा। नारीशक्ति तब नहीं आएगी जब हम उसे दिखाएंगे,बल्कि तब आएगी जब हम उसे नियंत्रित करना बंद कर देंगे। ■

-सीमा पाल

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

KEM Hospital Mumbai का नाम बदलने पर छिड़ा सियासी घमासान?

KEM Hospital का गौरवशाली इतिहास

क्यों हो रहा है विरोध?

विकास बनाम राजनीति

'लोढ़ा हटाओ, मुंबई बचाओ' का नारा क्यों?

अस्पताल का महत्व

वर्तमान स्थिति

मुंबई के प्रसिद्ध KEM Hospital Mumbai का नाम बदलने को लेकर एक नया विवाद शुरू हो गया है। महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा द्वारा अस्पताल का नाम बदलकर 'हिंदूहृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे' करने के प्रस्ताव ने KEM Hospital Name Change Controversy को जन्म दे दिया है। जहाँ एक ओर सरकार इसे सम्मान का प्रतीक मान रही है, वहीं दूसरी ओर शिवसेना (UBT) और विपक्षी दल इसे मुंबई की ऐतिहासिक पहचान मिटाने की साजिश बता रहे हैं। आखिर इस सियासी घमासान के पीछे की असली वजह क्या है और क्यों प्रदर्शनकारी 'लोढ़ा हटाओ, मुंबई बचाओ' के नारे लगा रहे हैं? १९२६ में स्थापित King Edward Memorial (KEM) अस्पताल मुंबई की चिकित्सा प्रणाली की रीढ़ रहा है। Seth Gordhandas Sunderdas Medical College से जुड़े इस संस्थान ने दशकों से न केवल मुंबई बल्कि पूरे देश को बेहतरीन डॉक्टर्स दिए हैं। इसकी वैश्विक पहचान को देखते हुए ही विशेषज्ञ इसके मूल नाम के साथ छेड़छाड़ का विरोध कर रहे हैं। मुंबई के पालक मंत्री (Guardian Minister) मंगल प्रभात लोढ़ा ने हाल ही में के.ई.एम. अस्पताल का नाम बदलकर 'हिंदूहृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे' करने का एक सुझाव या प्रस्ताव सामने रखा था। जैसे ही यह बात बाहर आई, मुंबई की राजनीति गरमा गई।

शिवसेना (UBT) और अन्य विपक्षी दलों का तर्क है कि ऐतिहासिक विरासत KEM अस्पताल १९२६ में बना था और यह मुंबई की एक ऐतिहासिक पहचान है। विपक्ष का कहना है कि पुरानी संस्थाओं के नाम बदलना उनकी विरासत को मिटाने जैसा है। विरोधियों का कहना है कि सरकार को अस्पताल की सुविधाओं, डॉक्टरों की कमी और सफाई पर ध्यान देना चाहिए, न कि केवल नाम बदलने की राजनीति करनी चाहिए। विपक्ष (खासकर आदित्य ठाकरे और शिवसेना UBT के नेता) सीधे तौर पर मंगल प्रभात लोढ़ा को निशाना बना रहे हैं। उनका आरोप है कि लोढ़ा और वर्तमान सरकार मुंबई की महत्वपूर्ण संस्थाओं पर अपना नियंत्रण थोपने की कोशिश कर रहे हैं। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि सरकार धीरे-धीरे मुंबई के गौरवशाली इतिहास को बदलने की कोशिश कर रही है।

KEM अस्पताल केवल एक अस्पताल नहीं, बल्कि एक मेडिकल कॉलेज (GSMC) भी है। यहाँ न केवल मुंबई, बल्कि पूरे महाराष्ट्र से गरीब मरीज इलाज के लिए आते हैं। इसकी एक अपनी 'ब्रैंड वैल्यू' है, जिसे बदलने का छात्र और डॉक्टर भी दबे स्वर में विरोध कर रहे हैं। के.ई.एम. अस्पताल के बाहर भारी विरोध प्रदर्शन हुआ है। विपक्षी कार्यकर्ताओं ने काला झंडा दिखाकर और नारेबाजी करके अपना गुस्सा जाहिर किया है। फिलहाल, सरकार की ओर से इस पर सफाई दी जा रही है कि यह सिर्फ एक विचार था, लेकिन विपक्ष इसे चुनाव से पहले मुंबई की अस्मिता का मुद्दा बना चुका है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि KEM Hospital Mumbai केवल एक इमारत नहीं है, बल्कि लाखों परिवारों की

उम्मीद है। नाम बदलने की सियासत के बीच आम आदमी की मांग सिर्फ इतनी है कि उन्हें इलाज के लिए लंबी कतारों से मुक्ति मिले और अस्पताल में आधुनिक वेंटिलेटर और बेड की संख्या बढ़ाई जाए। KEM Hospital Mumbai के नाम को लेकर छिड़ा यह विवाद केवल एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह विकास बनाम विरासत की बहस है। जहाँ प्रशासन का मानना है कि महापुरुषों के नाम पर संस्थानों का नामकरण सम्मान का प्रतीक है, वहीं नागरिक और विपक्षी दल बुनियादी सुविधाओं के सुधार को प्राथमिकता देने की मांग कर रहे हैं। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या सरकार इस विरोध के बावजूद नाम बदलने का फैसला लागू करती है या जनभावनाओं को देखते हुए अस्पताल की सुविधाओं में सुधार को प्राथमिकता दी जाती है।

KEM हॉस्पिटल का इतिहास

KEM हॉस्पिटल का जन्म एक 'स्वदेशी' विचार से हुआ था।इसकी शुरुआत १९२६ में हुई थी। उस समय ब्रिटिश शासन के दौरान, मुंबई के बड़े अस्पतालों में भारतीय डॉक्टरों को उच्च पदों पर काम करने का अवसर नहीं मिलता था। इस भेदभाव को चुनौती देने के लिए एक ऐसे संस्थान की आवश्यकता महसूस हुई जो पूरी तरह से भारतीयों द्वारा संचालित हो।

सेठ गोर्धनदास सुंदरदास मेडिकल कॉलेज (GSMC): अस्पताल के साथ ही GS Medical College की नींव रखी गई। इसके निर्माण के लिए सेठ गोर्धनदास सुंदरदास के परिवार ने दान दिया था। उनकी एक शर्त थी कि यहाँ का सारा स्टाफ और शिक्षक भारतीय होने चाहिए।

परेल और मिल मजदूर: उस समय परेल मुंबई का औद्योगिक केंद्र था, जहाँ कपड़े की कई मिलें थीं। इन मिलों में काम करने वाले हजारों गरीब मजदूरों को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा प्रदान करने के उद्देश्य से यह अस्पताल बनाया गया था।

KEM हॉस्पिटल का महत्व (Significance)

आज के समय में KEM केवल एक अस्पताल नहीं, बल्कि मुंबई की 'लाइफलाइन' का एक अभिन्न अंग है:

सस्ती चिकित्सा का केंद्र: यह अस्पताल बृहन्मुंबई नगर निगम (BMC) द्वारा चलाया जाता है। यहाँ हर दिन हजारों गरीब मरीजों का बहुत ही कम खर्च या मुफ्त में इलाज किया जाता है।

उत्कृष्ट शिक्षा (Medical Education): Seth GS Medical College भारत के टॉप मेडिकल कॉलेजों में आता है। यहाँ से निकले डॉक्टर आज दुनिया भर में चिकित्सा के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं।

*ऐतिहासिक उपलब्धियां: * भारत का पहला हृदय प्रत्यारोपण (Heart Transplant) और पहली टेस्ट ट्यूब बेबी जैसी कई ऐतिहासिक उपलब्धियों का गवाह यह अस्पताल रहा है।*

डॉ. पी.के. सेन और डॉ. इंदुजा हिंदूजा जैसे दिग्गजों ने यहीं अपना अनुसंधान (Research) किया था।

आपातकालीन सेवा (Trauma Care): मुंबई में होने वाली किसी भी बड़ी दुर्घटना (जैसे रेल हादसा या आतंकी हमला) के समय KEM अस्पताल मुख्य राहत केंद्र के रूप में काम करता है।

वर्तमान स्थिति

वर्तमान में KEM हॉस्पिटल में लगभग १,८०० से अधिक बेड हैं और यह लगभग सभी प्रकार की बीमारियों (Cardiology, Neurology, Nephrology आदि) के लिए विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करता है। यह अस्पताल न केवल मुंबई, बल्कि पूरे महाराष्ट्र और पड़ोसी राज्यों के मरीजों के लिए आशा की एक किरण है। ■

- पी. ज्योति

सिंधु जल संधि: एक साल में नुकसान और बदहाली

भारत और पाकिस्तान के बीच दशकों पुराने जल समझौते 'सिंधु जल संधि' (IWT) के निलंबन को एक वर्ष पूरा हो गया है। १९६० में विश्व बैंक की मध्यस्थता से शुरू हुई यह संधि इतिहास में पहली बार इतने लंबे समय के लिए अधर में लटकी है। भारत के सख्त कूटनीतिक रुख ने पाकिस्तान की रगों में बहने वाले पानी पर जो 'रेगुलेशन' लगाया है, उसने इस्लामाबाद की रातों की नींद उड़ा दी है।

कृषि क्षेत्र में 'ब्लैकआउट' और फसल बर्बादी

पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि का योगदान लगभग २३% है। सिंधु नदी तंत्र का पानी पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांतों के लिए 'लाइफलाइन' है।

सिंचाई का संकटः संधि निलंबित होने के बाद भारत ने अपनी निर्माणाधीन परियोजनाओं के जरिए पानी के भंडारण और बहाव को नियंत्रित करना शुरू किया है। इसके परिणामस्वरूप, पाकिस्तान के 'कैनाल कमांड एरिया' में पानी की उपलब्धता ३०% से ३५% तक कम दर्ज की गई है।

उत्पादन में गिरावटः सरकारी आंकड़ों और अंतरराष्ट्रीय कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, पानी की कमी से पाकिस्तान में गेहूं, गन्ने और विशेष रूप से 'लॉन्ग स्टैपल कॉटन' (कपास) की पैदावार को भारी नुकसान पहुँचा है, जिसका सीधा असर वहां के कपड़ा उद्योग पर पड़ा है।

अरबों डॉलर का आर्थिक झटका

आर्थिक विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस एक साल के दौरान पाकिस्तान को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ५ से ७ अरब डॉलर का नुकसान हुआ है।

विदेशी मुद्रा का संकटः जब घर में अनाज कम हुआ, तो पाकिस्तान को महंगे दामों पर गेहूं आयात करना पड़ा, जिससे उसका पहले से खाली विदेशी मुद्रा भंडार और भी रसातल में चला गया।

औद्योगिक मंदीः कृषि आधारित उद्योगों (जैसे शुगर मिल और टेक्सटाइल) को कच्चा माल न मिलने से हजारों लोग बेरोजगार हो गए हैं।

ऊर्जा संकटः अंधेरे में डूबता पाकिस्तान

पाकिस्तान अपनी बिजली की जरूरतों के लिए हाइड्रोपावर (जलविद्युत) पर बहुत अधिक निर्भर है।

रुकी हुई परियोजनाएंः भारत द्वारा सिंधु नदी की पश्चिमी शाखाओं पर बांधों और स्टोरेज यूनिट्स के निर्माण में तेजी लाने से पाकिस्तान के नीलम-झेलम जैसे पावर प्रोजेक्ट्स की दक्षता कम हो गई है।

बिजली की किल्लतः पाकिस्तान के प्रमुख शहरों में १२-१२ घंटे की लोडशेडिंग हो रही है क्योंकि बांधों में टर्बाइन चलाने के लिए पर्याप्त 'वाटर हेड' (पानी का दबाव) नहीं मिल पा रहा है।

भारत का 'वाटर डिप्लोमेसी' कार्ड

भारत ने उरी और पुलवामा के बाद ही साफ कर दिया था कि 'खून और पानी एक साथ नहीं

बह सकते।'

रणनीतिक बढ़त: भारत अब अपनी नदियों (रावी, ब्यास, सतलज) के उस पानी का भी पूरा उपयोग कर रहा है जो पहले बहकर पाकिस्तान चला जाता था। शाहपुर कंडी बांध और उझ परियोजना जैसे प्रोजेक्ट्स अब भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता हैं।

तकनीकी आपत्ति: भारत ने साफ कर दिया है कि वह संधि के पुराने नियमों में संशोधन चाहता है क्योंकि १९६० की परिस्थितियां आज के जलवायु परिवर्तन और आतंकी माहौल से मेल नहीं खातीं।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान की हार

पाकिस्तान ने इस मुद्दे को 'इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन' और संयुक्त राष्ट्र में जोर-शोर से उठाया है। पाकिस्तान का तर्क है कि भारत पानी को 'हथियार' के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। हालांकि, भारत ने वैश्विक समुदाय को यह समझाने में सफलता पाई है कि संधि की समीक्षा करना उसका कानूनी अधिकार है और वह किसी भी अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन नहीं कर रहा है।

भविष्य की चुनौतियां: क्या मरुस्थल बनेगा पाकिस्तान?

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह गतिरोध अगले दो-तीन साल और चला, तो पाकिस्तान के कई इलाके मरुस्थल में तब्दील हो सकते हैं। पानी के अभाव में वहां जमीन के अंदर का जलस्तर (Groundwater) भी तेजी से नीचे गिर रहा है, जिससे पीने के पानी का भी गंभीर संकट पैदा हो गया है।

प्रमुख बिंदु:

संधि की शुरुआत: १९ सितंबर १९६०।

विवाद का केंद्र: किशनगंगा और रतले हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट।

नुकसान का क्षेत्र: कृषि, बिजली, टेक्सटाइल और खाद्य सुरक्षा।

भारत का स्टैंड: आतंकवाद मुक्त माहौल में ही बातचीत संभव। ■

ब्/रो रिपा;

महाराष्ट्र में किडनी फेलियर के मामलों में उछाल

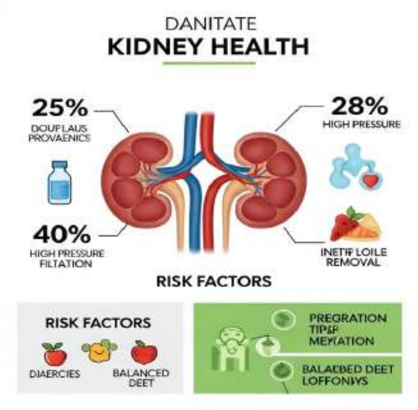

महाराष्ट्र से स्वास्थ्य जगत को लेकर एक चिंताजनक खबर सामने आ रही है। राज्य में किडनी फेल होने वाले मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। राज्य में किडनी फेल होने वाले मरीजों की संख्या में महाराष्ट्र से स्वास्थ्य जगत को लेकर एक चिंताजनक खबर सामने आ रही है। राज्य में किडनी फेल होने वाले मरीजों की संख्या में भारी उछाल आया है... राज्य में किडनी फेल (Kidney Failure) होने वाले मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी देखी जा रही है।

हालांकि, इस संकट के बीच एक राहत भरी खबर यह भी है कि राज्य में किडनी प्रत्यारोपण (Transplant) की संख्या भी पहले के मुकाबले दोगुनी हो गई है।

विशेषज्ञों और डॉक्टरों के अनुसार, महाराष्ट्र में किडनी के मरीजों की बढ़ती संख्या के पीछे कई गंभीर कारण हैं अनियंत्रित डायबिटीज (Diabetes): शुगर लेवल बढ़ना किडनी डैमेज का सबसे बड़ा कारण बन रहा है।

हाई ब्लड प्रेशर: उच्च रक्तचाप की वजह से किडनी की धमनियों पर दबाव पड़ता है। बदलती लाइफस्टाइल: जंक फूड का अधिक सेवन और शारीरिक व्यायाम की कमी।

प्रदूषण और तनाव: शहरी जीवन में बढ़ता तनाव भी स्वास्थ्य पर विपरीत असर डाल रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले कुछ वर्षों में महाराष्ट्र के अस्पतालों में किडनी ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया काफी सुव्यवस्थित हुई है। अब प्रत्यारोपण की रफ्तार दोगुनी हो चुकी है। इसके पीछे दो मुख्य वजहें हैं:

अंगदान (Organ Donation) के प्रति जागरूकता, अब लोग अंगदान के महत्व को समझ रहे हैं, जिससे वेटिंग लिस्ट में सुधार हुआ है। नई तकनीकों और सरकारी योजनाओं के कारण ट्रांसप्लांट अब अधिक सुलभ और सफल हो रहा है।

डॉक्टर्स का कहना है कि अगर हम अपनी दिनचर्या में छोटे बदलाव करें, तो इस गंभीर स्थिति से बचा जा सकता है:

नियमित रूप से फुल बॉडी चेकअप और किडनी फंक्शन टेस्ट (KFT) करवाएं।

दिन में कम से कम ३-४ लीटर पानी पिएं।

नमक और चीनी का सेवन कम करें।

बिना डॉक्टर की सलाह के 'पेनकिलर्स' (Painkillers) न लें। दिन में कम से कम ३० मिनट पैदल चलें या योग करें। इससे ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है। कई लोग सिरदर्द या बदन दर्द होने पर तुरंत दवा ले लेते हैं, जो किडनी के लिए जहर के समान है। शराब और धूम्रपान का त्याग, यह सीधे तौर पर किडनी की कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

साल में एक बार अपनी किडनी की जांच जरूर करवाएं, खासकर अगर आपको शुगर या बीपी की समस्या है। ■

ककड़ी की खेती

ककड़ी के पौधे लता के रूप में फैलकर विकास करते है । भारत में ककड़ी की खेती लगभग सभी जगहों पर की जाती है । किसान इसकी खेती कर अच्छी कमाई भी करते है। सामान्य तौर पर ककड़ी की खेती किसी भी उपजाऊ मिट्टी में की जा सकती है। सामान्य बारिश के मौसम में इसके पौधे ठीक से विकास करते है । किन्तु गर्मियों का मौसम पैदावार के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। ठंड जलवायु फसल के लिए अच्छी नहीं होती है। बगीचों के लिये भी यह फसल उपयोगी है जोकि आसानी से बुआई की जा सकती है।

ककड़ी एक कद्दू वर्गीय फसल हैं, जो खीरे के बाद दूसरे नंबर पर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। भारत में इसकी खेती किसान नगदी फसल के रूप में करते हैं। इसकी खेती कम लागत में अच्छा मुनाफा भी दे सकता है। भारत में लगभग सभी क्षेत्रों में इसकी खेती की जाती है। यह भारतीय मूल की फसल है, जिसे जायद की फसल के साथ उगाया जाता है। इसके फल एक फीट तक लम्बे होते हैं। ककड़ी को मुख्य रूप से सलाद और सब्जी के लिए इस्तेमाल किया जाता है। गर्मियों के मौसम में ककड़ी का सेवन अधिक मात्रा में किया जाता है। जैसा की हम सभी जानते हैं कि गर्मियों का मौसम अभी चरम पर पहुंच रहा है। ऐसे में बाजार में इसकी मांग भी बढ़ती जा रही है। किसान भाई इसकी खेती कर अच्छी कमाई भी करते हैं। यदि वैज्ञानिक विधि से आप इसकी खेती करें तो इसकी खेती से मुनाफा डबल भी हो सकता है। यदि आप भी ककड़ी की खेती करने का मन बना रहे हैं, तो ट्रैक्टर जंक्शन की आज की पोस्ट में ककड़ी की खेती कैसे करें तथा ककड़ी की खेती का समय, पैदावार के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही हैं, जिसके माध्यम से आप इसकी अच्छी खेती कर इस मौसम में भी अपने खेत से एक अच्छी आमदनी कर पाएंगे।

ककड़ी की उन्नत खेती और उत्पादन

'सही तकनीक से की गई ककड़ी की खेती किसानों की आय दोगुनी कर सकती है।'

ककड़ी की खेती का सही समयः

फरवरी-मार्च (उत्तर भारत)

जनवरी-फरवरी (मध्य/दक्षिण भारत)

जून-जुलाई (मानसून फसल)

'६० दिन में मुनाफा या सीधा नुकसान–ककड़ी की खेती का असली सच क्या है?

बाजार में ककड़ी की मांग हर साल बढ़ती है, लेकिन हर किसान इससे कमाई नहीं कर पाता।

वजह साफ है–लोग सिर्फ 'कैसे करें' जानते हैं, लेकिन 'क्या गलत हो सकता है' नहीं समझते।

अगर आप सच में जानना चाहते हैं कि ककड़ी की खेती कैसे करें और उससे सही मुनाफा कैसे लें, तो यह गाइड आपको पूरी सच्चाई बताएगा।'

ककड़ी कितने दिन में तैयार होती है?

आमतौर पर ४५-६० दिनों में पहली तुड़ाई शुरू हो जाती है।

ककड़ी की खेती में कितना मुनाफा है?

एक हेक्टेयर में ₹६०,००० से ₹१,२०,००० तक मुनाफा संभव है।

ककड़ी की खेती का सही समय क्या है?

फरवरी-मार्च और जून-जुलाई सबसे उपयुक्त समय माना जाता है।

ककड़ी की खेती में सबसे ज्यादा नुकसान किससे होता है?

गलत सिंचाई, कीट नियंत्रण में लापरवाही और बाजार की जानकारी न होना सबसे बड़े कारण हैं।

ककड़ी की खेती के लिए सही समय

अगर आप जानना चाहते हैं कि ककड़ी की खेती कैसे करें, तो सबसे पहले सही समय चुनना जरूरी है।

उत्तर भारतः फरवरी-मार्च

मध्य भारतः जनवरी-फरवरी

मानसून सीजनः जून-जुलाई

सही समय पर बुवाई करने से ककड़ी की खेती में मुनाफा बढ़ता है और उत्पादन बेहतर मिलता है।

मिट्टी और जलवायु

ककड़ी की खेती के लिए हल्की दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

तापमानः २०°C से ३५°C

pH स्तरः ६ से ७

जल निकासीः बहुत अच्छी होनी चाहिए

ध्यान रहे, पानी रुकने वाली जमीन में जड़ सड़न की समस्या बढ़ जाती है। यही वजह है कि कई बार cucumber farming in India में

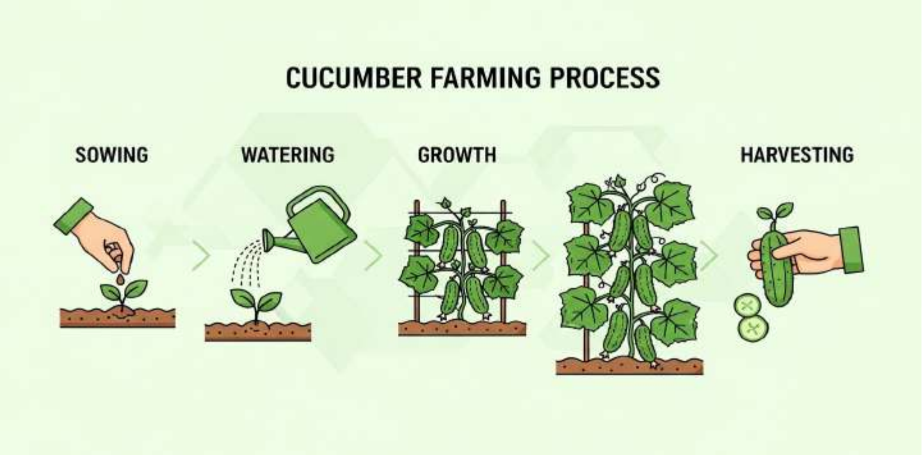

शुरुआती नुकसान यहीं से शुरू होता है।

☐ बीज और बुवाई की विधि

ककड़ी की खेती कैसे करें में सही बीज का चयन सबसे अहम है।

बीज मात्राः २-२.५ किलो प्रति हेक्टेयर
बीज उपचारः १०-१२ घंटे पानी में भिगोएं
कतार दूरीः १.५-२ मीटर
पौधे की दूरीः ६०-९० सेमी

सही दूरी से पौधों को हवा और धूप दोनों मिलती हैं, जिससे ककड़ी की खेती का सही तरीका अपनाया जाता है।

सिंचाई प्रबंधन

ककड़ी में पानी का संतुलन सबसे महत्वपूर्ण है।
शुरुआती समय में हल्की सिंचाई
फूल और फल आने पर नियमित सिंचाई
ड्रिप इरिगेशन सबसे बेहतर विकल्प

अधिक पानी देने से रोग और फफूंदी बढ़ सकती है, जिससे ककड़ी की खेती में मुनाफा कम हो जाता है।

खाद और उर्वरक

अगर आप सच में समझना चाहते हैं कि ककड़ी की खेती कैसे करें, तो खाद प्रबंधन को नजरअंदाज मत करें।

गोबर की खादः १५-२० टन/हेक्टेयर
नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश संतुलित मात्रा में जैविक खेती के लिए वर्मी कम्पोस्ट

संतुलित खाद से ककड़ी की खेती में उत्पादन तेजी से बढ़ता है।

रोग और कीट नियंत्रण

ककड़ी की खेती में ये समस्याएं आम हैं:
फल मक्खी
एफिड्स
पाउडरी मिल्ड्यू
बचाव के उपाय
नीम तेल स्प्रे

समय-समय पर निरीक्षण
रोग दिखते ही उपचार

अगर समय पर ध्यान नहीं दिया गया, तो पूरी ककड़ी की खेती प्रभावित हो सकती है।

तुड़ाई और उत्पादन

कई किसान पूछते हैंः ककड़ी कितने दिन में तैयार होती है?

४५-६० दिन में पहली तुड़ाई शुरू हो जाती है।
हर २-३ दिन में तुड़ाई करें

औसत उत्पादनः ८०-१२० क्विंटल प्रति हेक्टेयर यही कारण है कि ककड़ी की खेती में मुनाफा जल्दी दिखाई देता है।

लागत और मुनाफा

'कई किसानों के अनुसार, ककड़ी की खेती में सबसे बड़ा फर्क 'टाइमिंग' और 'मार्केट' का होता है। अगर सही समय पर फसल बाजार में पहुंच जाए, तो मुनाफा दोगुना तक हो सकता है, लेकिन देर होने पर कीमत आधी रह जाती है।' यह सबसे ज्यादा पूछा जाने वाला सवाल हैः

ककड़ी की खेती में कितना मुनाफा होता है?

लागतः ₹२५,०००-₹४०,००० प्रति हेक्टेयर
मुनाफाः ₹६०,०००-₹१,२०,००० तक

लेकिन बाजार का भाव सही होना जरूरी है। यही factor cucumber farming in India में profit तय करता है।

आम गलतियां जिनसे बचना जरूरी है

गलत मौसम में बुवाई
अधिक पानी
कीट नियंत्रण में लापरवाही
बाजार की जानकारी के बिना खेती

ये गलतियां सीधे ककड़ी की खेती के मुनाफे को प्रभावित करती हैं।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:www.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532